प्रकाशक—
बी० एस० शर्मा
राजकुमार नवयुवक-मंडल
बनारस।

Approval Copy

मुद्रक—
पं० गिरिजाशङ्कर मेहता
मेहता फाइन आर्ट प्रेस, सुनरगली,
काशी।

नम्र निवेदन

आज **पश्चिमी राजपूताना के देशी नरेश** नामक पुस्तक भारत के प्राय सभी नरेश, रानी, महारानी राजकुमार, राजकुमारी ठिकानेदार तथा तालुकेदार आदि की सेवा में भेंट करते हुए अपार आनन्द हो रहा है। इसमें हमने **पश्चिमी राजपूताना** की प्रत्येक स्टेट क वर्तमान नरेशों का ूरा परिचय अर्थात् उनका कब जन्म हुआ, कब वे उत्तराधिकारी हुए, किस कालेज में क्या योग्यता उन्होंने प्राप्त की, कब राज्य के पूरे अधिकार उनको प्राप्त हुए, किस राजघरा की राज्य-कन्या के साथ उनका विवाह हुआ, वे रानी, महारानी जीवित हैं या मर गई हैं, उनसे उनको कै सन्तानें कौनसी कब पैदा हुई हैं, भावी उत्तराधिकारी कब पैदा हुआ है बृटिश सरकार या अन्य से कौन कौनसे खिताब कब-कब प्राप्त हुए हैं के तोपों की सलामी प्राप्त करने का उन्हे अधिकार प्राप्त है—आदि सभी जानने-योग्य बातें इसमें दी गई है। इस साथ ही हमने **पश्चिमी राजपूताना** की प्रत्येक स्टेट क पूर्व का **संक्षिप्त इतिहास** भी दिया है यही नहीं, प्रत्येक स्टेट के **शासक का नाम, क्षेत्रफल, आबादी, आमदनी-खर्च, सलामी** आदि के अलावे रियासतों में जाने क मार्ग या रेलवे स्टेशन

का नाम तथा दूरी मीलों में दी गई है, जिससे स्टेटों के सम्बन्ध रखने वालों के अलावा भ्रमणकर्ताओं तथा व्यापारियों के लिये यह ख़ास तौर से यह उपयोगी हो गई है।

इसके अलावा जो ख़ास चीज़ इसमें दी गई है, वह मारवाड़ के देशी नरेश की स्टेटों के ठिकानेदार, जागीरदार, नरेश के भाई बन्धु, इस्तिमुरारदार, राजकुमार, राजकुमारी आदि का परिचय अर्थात उनके जन्म तथा उत्तराधिकार की तारीख़ तथा सन, योग्यता, विवाह-सम्बन्ध, पुत्र-पुत्री आदि, ठिकाने या जागीर आदि की आय, राज्य को अदा किए जानेवाले ख़िराज की रकम आदि पर भी पूरा प्रकाश डाला गया है।

साथ ही युवराज, राजकुमार, राजकुमारियों आदि की उमर, योग्यता उनके कुल आदि के बारे में भी यथा-उचित जानकारी कराई गई है, जिससे विवाह-सम्बन्ध करने के समय में भी यह पुस्तक एक गाईड का काम देनेवाली हो गई है।

जोधपुर (मारवाड़), पालनपुर, जैसलमेर, दाँता, बीकानेर तथा सिरोही स्टेटों के नरेशों तथा उनके मांडलिक ठिकानेदार, जागीरदार आदि सभी का पूरा परिचय इस पुस्तक में इतिहास सहित आया है। इनमें-से जोधपुर तथा बीकानेर स्टेटों के राजघराने राठौरवंशी राजपूतों के हैं। पालनपुर का मुसलमानी राज्य है। जैसलमेरवाले भाटी, दाँतावाले परमार तथा सिरोही के देवड़ा राजपूत हैं। इस प्रकार यह ग्रंथ कई वंशावलियों के राज्यों से

सम्बन्ध रखनेवाला है, जिनके बारे में यथास्थान अच्छा परिचय भी कराया गया है।

इतना सब करने पर भी सम्भव है, पूरी जानकारी हमें न प्राप्त हुई हो, और बहुतों का परिचय इसमें देने से भी रह गया हो, या कोई बात भूल से गलत भी लिख दी गई हो, इसके लिए जिनका किसी प्रकार का भी परिचय कहीं पर भी इसमें आया है उनसे प्रार्थना है कि वे इसकी एक-एक प्रति मंगवाकर पढ़ने की कृपा करें तथा इसमें जो कुछ भी भूल से या जानकारी न मिलने के कारण भूल रह गई हो, उसकी सूचना देने की कृपा करें।

अन्त में हमारी प्रत्येक नरेश, जागीरदार आदि से प्रार्थना है कि वे इसकी काफ़ी प्रतियां मंगवाकर इसके प्रचार में हमारा हाथ बटाने में सहायता करें जिससे इसे हम और भी अधिक सुसज्जित रूप में निकाल कर आप सबकी सेवा में भेंट कर सकें।

—प्रकाशक
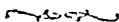
हमारी प्रकाशित पुस्तकें

देशी नरेश और व्यभिचार	निछावर	१०)
रानियों के आँसू	,,	१०)
भारत के देशी नरेश	,,	१०)
मध्यभारत के देशी नरेश [जागीरदार आदि सहित]	,,	१०)
पूर्वी भारत के देशी-नरेश ,, ,,	,,	१०)
दक्षिणी राजपूताना, अजमेर तथा मेवाड़ के देशी नरेश [ठिकानेदार आदि सहित]	,,	१०)

प्रेस में:-

पूर्वी राजपूताना के देशी-नरेश [जयपुर रेज़ीडेंसी सहित]

उत्तरी भारत के देशी-नरेश [काश्मीर सहित]

पश्चिमी भारत के देशी नरेश

दक्षिणी भारत के देशी नरेश

नेपाल के स्वतन्त्र हिन्दू नरेश

पता–राजकुमार नवयुवक-मण्डल, काशी ।

विषय-सूची

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ

विषय — पृष्ठ

विषय पृष्ठ

विषय		पृष्ठ

सिरोही स्टेट १५६

पश्चिमी राजपूताना

स्टेट्स एजेंसी

सन १८३९ ई० में जोधपुर के लिये पोलीटिकल एजेंट की नियुक्ति हुई और तीस वर्ष के बाद इसी के साथ जैसलमेर राज्य भी जोड़ दिया गया। सिरोही की रियासत भी सन १८७० तक गवनर जनरल के असिस्टेंट एजेंट के साथ संबधित रही। सन १८७० ई० में यह एरिनपुरा की इर्रेगुलर फोर्स के कमान्डेंट के पोलीटिकल के अख्तियार में रखा गया वही आगे जाकर १८७९ ई० में तीन राज जोधपुर, जैसलमेर और सिरोही राज्य का पोलीटिकल एजेंट बनाया गया। तभी से पश्चिमी राजपूताना स्टेट एजेंसी का नामकरण पड़ा है। १८८१ ई० में एरिनपुरा फार्स के कमान्डेंट पोलीटिकल एजेंट की ड्यूटी से अलग कर दिए गए। १८८२ ई० में एरिनपुरा के कमान्डेंट का हेडक्वार्टर एरिनपुरा से हटकर जोधपुर कर दिया गया और वह पश्चिमी राजपूताना स्टेट के रेजीडेंट के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा।

१९०६ ई० में बीकानेर पोलीटिकल एजेंसी के टूटने पर बीकानेर स्टेट का भी चार्ज इसी में जोड़ दिया गया। नव साल बाद बीकानेर

जोधपुर (मारवाड़) स्टेट

शासक—एयर कोमोडोर (AIR COMMODORE) हिज हाईनेस राजराजेश्वर महाराजाधिराज सर श्री उम्मेद सिंह जी साहब बहादुर जी० सी० आई० ई०, के० सी० वी० ओ०, ए० डी० सी० महाराजा आफ जोधपुर।

जन्म—८ जुलाई सन १९०३ राजगद्दी—३ अक्तूबर १९१८

क्षेत्रफल—३६०७१ वर्गमील आबादी—२१३४८४८

आमदनी—१,६४,०६००० रुपया खर्च—१,४६,४८,०००

सलामी—स्थायी १७, राज्य में १९ तोप।

संक्षिप्त इतिहास

इस प्रसिद्ध कुल की उत्पत्ति के सम्बन्ध में बहुत तरह की बातें सुन पड़ती हैं। ये लोग श्रीरामचन्द्रजी के ज्येष्ठ पुत्र कुश से अपना उत्पन्न होना प्रमाणित करते हैं। यदि इनका मत युक्तिसिद्ध समझा जाय तो अवश्य ही कहना पड़ेगा कि राठौर लोग पवित्र सूर्यकुल से निकले हैं, किन्तु राजस्थान के भट्टकवियों ने इनको इस उच्च सम्मान से सम्मा-

नित न करके दूसरी रीति से इनका उत्पन्न होना प्रमाणित करने की चेष्टा की है। वे कहते हैं कि 'राठौर लोग सूर्यकुल तिलक महाराज रामचन्द्रजी के ज्येष्ठ पुत्र से अपनी उत्पत्ति बतलाते हैं, परन्तु यह उनका भ्रम है। असल में वे महर्षि कश्यप के वंश के एक राजा के वीर्य से किसी दैत्यकुमारी के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं।" यदि यह मत ठीक समझा जाय तो राठौर लोग पवित्र आर्यकुल के लिये जो उचित सम्मान है उससे सम्मानित नहीं किये जा सकते, परन्तु यह मत हमारी समझ में उचित और न्यायपूर्ण नहीं जान पड़ता।

राठौरों को यदि सूर्यकुल से उत्पन्न न मानें तो भी पवित्र आर्यकुलोचित सम्मान से उन्हें वञ्चित नहीं कर सकते। विशाल चन्द्रवंश के एक स्थल में उनको स्थान दिया जा सकता है। राजर्षि विश्वामित्र से दो पीढ़ियाँ पहले कुश नामक जो राजा हो गया था, उसके कुल में ये लोग स्थान पा सकते हैं।

भट्टग्रन्थों में लिखा है कि राजर्षि विश्वामित्र की जन्मभूमि गाधिपुर* राठौरों की आदि निवासभूमि थी और खृष्टीय पाँचवीं शताब्दी के आरम्भ में वे वहाँ के सिंहासन पर आरूढ़ थे, इससे पहले उनके विषय में कोई विवरण नहीं मिलता, जो कुछ मिलता भी है उसमें बहुत मिलावट जान पड़ती है अतएव उस मिलावट से असल बात का पता लगाना अत्यन्त कठिन है। अस्तु, यद्यपि राठौर लोग अपने को सूर्यवंशी बतलाते हैं परन्तु इस विषय में कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता।

---

* कन्नौज।

कुछ इतिहासज्ञों का ऐसा भी मत है राठौर शब्द राष्ट्रकूट शब्द से बिगड़ कर बना हुआ है, जिसका शब्दार्थ राष्ट्रों का समूह होता है अर्थात् इस वंश के पूर्वजों के आधीन में काफी राष्ट्र रहे होंगे, जिस कारण इस खानदान के लोगों के लिये राष्ट्रकूट कहने की प्रथा चल पड़ी होगी जो आगे प्राकृति भाषा में उसस बिगड़ कर राठौर हो गया है। इस शब्द का प्रयोग ईसा से २६४ वर्ष पूर्व ने दक्षिण की अशोक की राज घोषणाओं में भी प्राप्त होता है। उसके बाद ईसा की पाँचवीं शताब्दी में राठौरवंश के अभिमन्यु नामक एक नरेश का शिलालेखों में जिक्र भी पाया जाता है, जब से कि इनके इतिहास का क्रमबद्ध पता लगता है।

अतएव खृष्टीय पाँचवी शताब्दी को राठोरों के ऐतिहासिक जीवन का प्रथम युग कहना अनुचित नहीं होगा। क्योंकि इसी समय उनका वृतान्त पुराणों से निकल कर ऐतिहासिक जगत में आया है। इसी समय से उनका जीवनचरित्र स्पष्ट प्रकट भी होता है। भट्टग्रन्थों में लिखा है कि शहाबुद्दीन के भारत पर चढ़ाई करने के समय राठोर लोग समस्त भारत में अपना आधिपत्य जमाने की इच्छा से देहली के तुआर और अणहिलवाड़ा के चालुक्यों से घोर बैर भाव प्रकट कर रहे थे।

इस संसार में सभी अनित्य है राज्य, धन, गौरव कुछ भी स्थायी नहीं। किन्तु इसी अनित्य और अचिरस्थायी राज्य के लिये राठौरों ने जो महा अनर्थ किया उससे उन सबका नाश तो हुआ हो,

वंशधरों के देखने से इस बात का तनिक भी परिचय नहीं मिलता कि इनके पूर्वपुरुष बड़े ही गौरववाले रहे होंगे * ।

राठोरवंशी नरेशों की प्रारम्भिक राजधानी कन्नौज था, जैसा कि हमने ऊपर भी बताया है जब कि शहाबुद्दीन गोरी ने सन् ११९४ ई० में कन्नौज पर कब्जा कर लिया था और जिस ग्लानि से जयचन्द ने गङ्गा नदी में डूबकर आत्मघात भी कर लिया था इस प्रकार पौराणिकों के मतानुसार १४ शताब्दी तक राज्य करने पर इनका वहां से राज्य का खात्मा हो गया और जयचन्द के पुत्र या पौत्र शिवाजी ने द्वारका की यात्रा के लिये प्रस्थान भी किया था रास्ते में ही आपने खेड़ नामक स्थान पर कब्जा कर लिया और बाद में लुटेरों के एक झुण्ड को पीछे हटाकर पाली नामक स्थान पर वे रहने लगे आपके पुत्र राव अस्थानजी ने भीलों से ईडर को छीनकर अपने छोटे भाई सोनिग को देने की कृपा भी की थी। आप तथा आपके वंशजों ने शिवजी की १२वीं पीढ़ी तक बराबर अपने राज्य की उन्नति ही की सन् १३९४ ई० में लगभग मन्डोर को लेकर राठोरों की शक्ति की दौड़ ने मारवाड़ में दिखला दिया था उन्होंने उसको अपनी राजधानी भी बना

* राठोरकुल धान्दुल, भदेल, चाकित, दुहरिया आदि चौबीस शाखाओं में विभक्त है इस कुल के आदि चार्य गोत्र हैं। माध्यन्दिनी शाखा शुक्राचार्य गुरु, गरुपाद, अग्नि तथा पंखिनी इसकी देवी हैं। टाड साहब इनका गौतम गोत्र देखकर इनको बौद्धधर्मावलम्बी अनुमान करते हैं।

अधिकांश निर्जल भूमि यानी रेगिस्तान होता है जैसा ऊपर लिखा भी जा चुका है राव सिवाजी की १८ वीं पीढ़ी में राव जोधाजी हो गए हैं, जिन्होंने जोधपुर नगर की सन १४५९ ई० में नींव डाली थी और राव जोधाजी के बाद ९ वीं पीढ़ी में महाराजा जसवन्तसिंह मारवाड़ की गद्दी पर हुए जिनको सर्वप्रथम महाराजा की उपाधि प्राप्त हुई था महाराजा जसवन्तसिंह की छठी पीढ़ी में महाराजा मानसिंह हुए थे जो सन १८०३ ई० में राज्य के उत्तराधिकारी हुए थे और जिन्होंने सन १८१८ ई० में बृटिश-सरकार के साथ सन्धि की थी। आपके बाद महाराजा तख्तसिंह उत्तराधिकारी हुए थे, जिनको गुजरात के अहमदनगर से सन १८४३ ई० में गोद लिया गया था आपने अपने राज्य की साँभर झील को बृटिश-सरकार को ठीके पर देने की कृपा भी की था।

आपके बाद आपके बड़े पुत्र महाराजा जसवन्तसिंह द्वितीय राज्य के उत्तराधिकारी हुए थे महाराजा जसवन्तसिंह के बाद उन्हीं के पुत्र महाराजा सरदारसिंह राज्य के उत्तराधिकारी हुए थे। आपने सर्वप्रथम राजपूताना में गत हिज़ मैजेस्टी सम्राट सप्तम एडवर्ड को अपने राज्य में पधरा कर स्वागत किया था आपने सन १८९७-९८ ई० में भारत के उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर तथा सन १९०१ ई० में चीन में भारत सरकार की सहायता करने के लिये अपनी इम्पीरियल सरविस लान्सर्स भेजी थी। आपको बून्दी के महाराव राजा रघुवीरसिंह की भगिनी से तीन पुत्र तथा दो राजकुमारियाँ

पैदा हुई थीं जिनमें से ज्येष्ठ स्व० महाराजा सर सुमेरसिंह के० बी० ई० थे आपका जन्म ४ थी जनवरी सन १८९८ ई० में हुआ था। दूसरे महाराजा सर उम्मेदसिंह जी० सी० एस० आई० जी० सी० आई० ई०, के० सी० वी० ओ० ए० डी० सी० हैं जिनका जन्म ८ वीं जुलाई सन १९०३ ई० में हुआ है और जो जोधपुर स्टेट के वर्तमान नरेश हैं। तीसरे महाराज अजीतसिंह हैं जिनका जन्म मई सन १९०७ ई० में हुआ है।

महाराजा सर सुमेरसिंह सन १९११ में राज्य के उत्तराधिकारी हुए थे और गत यूरोपीय महायुद्ध में इम्पीरियल सर्विस कॉन्टिन्जेन्ट के साथ फ्रांस में स्वयं उपस्थित रहकर ब्रिटिश सरकार की सहायता की थी। आप ३ री अक्टूबर सन १९१८ को स्वर्गवासी हो गये हैं।

मारवाड़ राज्य के नरेशों ने मुगल सम्राटों की भी अच्छी सहायता समय समय पर की थी जिसके लिये आप लोगों का नाम भारत के इतिहास में सदा अजर अमर रहेगा। मेवाड़ की प्रसिद्ध महारानी मीरा भी इसी कुल में उत्पन्न हुई थीं इस कारण से मारवाड़ राज्य का नाम साहित्य क्षेत्र में भी उसी प्रकार आदर दृष्टि से देखा गया है और देखा जायगा।

वर्तमान नरेश का संक्षिप्त परिचय

एयर कमोडोर हिज हाइनेस राजराजेश्वर सर उम्मेदसिंहजी बहादुर जी० सी० एस० आई०, जी० सी० आई० ई०, के० सी० वी० ओ०, ए० डी० सी० – आपका जन्म ८ वीं जुलाई सन

१८९३ ई० को हुआ है आपने अजमेर के मेयोकालेज में शिक्षा प्राप्त की है आप अपने बड़े भ्राता महाराजा सर सुमेरसिंह बहादुर के स्वर्गवासी हो जाने पर ३ री अक्टूबर सन १९१८ ई० को राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए हैं आप सेना में आनरेरा कैप्टन अक्टूबर सन १९२१ ई० में बनाए गए हैं। मार्च सन १९२२ ई० में हिज़ रायल हाईनेस दी प्रिंस आफ वेल्स जब जोधपुर में पधारे थे, नाइट कमांडर आफ दी रायल विक्टोरियन आर्डर बनाए गए २ रा जून सन १९२३ ई० को आनरेरी मेजर के पद पर आपकी तरक्की की गई थी और अगस्त सन १९२३ ई० को आप आनरेरी लेफ्टीनेंट कर्नल भी बना दिए गए ३ रा जून सन १९२५ ई० में आप के सी० एस० आई० बनाए गए थे तथा १ली जनवरी सन १९३० ई० को आप जी० सी० आई० ई० बनाए गए २३ जून सन १९३६ ई० को जी० सी० एस० आई० भी बनाए गए सितम्बर सन १९३६ ई० में सेना के आनरेरी कर्नलशिप का भी पद आपको प्रदान किया गया फरवरी सन १९३७ में हिज़ मैजेस्टी दी किंग इम्परर के आप आनरेरी ए० डी० सी० भी घोषित किए गए मार्च सन १९२९ ई० को रायल एयर फोर्स के आनरेरी एयर कोमोडोर भी नियुक्त किए गए आपने सन १९२५, १९२८, १९३२ तथा १९३७ ई० में इंगलैंड की यात्रा भी की है। सन १९३२ ई० को आपने यूरोप की भी यात्रा की थी। सन १९३३ व १९३५ ई० में आपने पूर्वी अफ्रीका की भी यात्रा की है।

श्रीमान को १७ तोपों की स्थायी सलामी उतारने का अधिकार है साथ ही आपको १९ तोपों की सलामी राज्य के भीतर उतारने का भी अधिकार प्राप्त है

श्रीमान का विवाह उम्मेद नगर के राव बहादुर ठाकुर जयसिंह भाटी की राजकन्या के साथ ११ वीं नवम्बर सन १९२१ ई० को सम्पन्न हुआ है। इनसे श्रीमान को पाँच पुत्र तथा १ राजकुमारी भी पैदा हुई है —

(१) महाराजकुमार श्री हनुवन्तसिंह-आपका जन्म १६ वीं जून सन १९२३ ई० का हुआ है आप राज्य के भावी उत्तराधिकारी भी हैं

(२) महाराजकुमार श्री हिम्मतसिंह-आपका जन्म २१ वीं जून सन १९२५ ई० का हुआ है।

(३) महाराजकुमार श्री हरिसिंह-आपका जन्म २१वीं सितबर सन १९२९ ई० का हुआ है

(४) एक राजकुमारी-जिनका जन्म १४वीं सितम्बर सन १९३० ई० का हुआ है

(५) महाराजकुमार श्री देवीसिंह-आपका जन्म २० वीं सितम्बर सन १९३२ ई० को हुआ है

(६) एक राजकुमार-जिनका जन्म ११वीं अक्टूबर सन १९३३ ई० का हुआ है

आपके घराने मे निम्नलिखित राज्यों के नरेशों का नजदीकी सम्बन्ध भी है —

एक ही घराने के-ईडर, किशनगढ़, रतलाम, सैलाना

सीतामऊ, तथा बीकानेर के नरेश आदि।

वैवाहिक सम्बन्धी—उदयपुर, जयपुर, बून्दी, नरसिंहगढ़, रीवाँ, सिरोही, जैसलमेर, जामनगर तथा कच्छ।

सुप्रसिद्ध व्यक्ति विशेष

मारवाड़ के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों की तीन श्रेणियाँ हैं—

(१) राजघराने के सदस्य जो राजवी पुकारे जाते हैं।

(२) कुलीन पुरुष तथा सरदार गण।

(३) प्रमुख पदाधिकारी गण जो मुत्सद्दी कहे जाते हैं।

उपरोक्त तीन श्रेणियों में-से द्वितीय श्रेणी वाले पुन चार वर्गों में विभक्त किए गए हैं।

(क) उनमे-से सर्वप्रथम सिरायतों का वर्ग है। इनकी पूरी सख्या दस की है, जिनमें-के सभी राठौरवंशी हैं और वे बाकी सभी से श्रेष्ठ गिने तथा माने जाते हैं उनको दोहरी ताज़ीम प्राप्त होती है। (१) इनके पहुचने तथा जाने के समय महाराजा को उठना पडता है (२) हाथ का कुरब अर्थात् इस वर्ग के सरदारों को दरबार में पधारने पर महाराजा ताज़ीम देते हैं यानी उठकर उनका स्वागत करते हैं और सरदार अपनी तलवार उनके सामने रख देते है और झुककर उनको सलाम करते हैं तथा महाराजा के लबादे या चोंगा के किनारे की मगजी को छूते हैं। महाराजा इनकी सलाम की स्वीकृति में सरदार के कधों पर अपना हाथ रखते हैं, जो बाँह पसाव कहा जाता है और उसे अपनी छाती तक

अन्द्राकार के भीतर - स्थान बराबरी के हैं अर्थात् किसी भी खास सिरायत के लिये कोई भी खास स्थान नियुक्त नहीं किया गया है। सिरायत मण्डली के प्रधान होने के कारण पोकरण के अधिकारी ही केवल नजर भेंट करने के अवसर पर इस श्रेणी के सभी सदस्यों में सबसे प्रथम स्थान प्राप्त करते हैं।

(ख) दूसरी श्रेणी में वे सरदार आते हैं, जिनको हाथ का कुरब का अधिकार प्राप्त है इनमें राठौर गणायत अर्थात अन्य जाति वाले या पदाधिकारी जो इस श्रेणी के बनाए गए हैं सम्मिलित हैं जब कभी इस श्रेणी के सरदार महाराजा से मिलने दरबार में आते हैं, उनको अपनी तलवार महाराजा बहादुर के सामने रखकर महाराजा के चोंगे या लबादे का मगजी को छूकर तथा झुककर सलाम करनी आवश्यक होती है। महाराजा उनकी सलाम की स्वीकृति अपना हाथ सरदार के कंधे पर रखकर यानी बाँह पसाव कर उसे अपनी छाती से छुलाते हैं, जो प्रथा हाथ का कुरब कहलाती है।

इस श्रेणी के सरदार गण पुनः दो वर्गों में विभाजित किए गए हैं।

(१) जिनको दोहरी ताजीम का अधिकार है।

(२) जिनको एकहरी ताज़ीम का अधिकार है।

दोहरी ताज़ीम जिन सरदारों को प्राप्त है, दरबार में उनके पधारने तथा दरबार से प्रस्थान करने के समय महाराजा को अपने स्थान से उठना पड़ता है और एकहरी ताज़ीम वाले सरदार के लिये,

सवारी करेंगे ठाकुर साहब महाराजा बहादुर के ऊपर मोरछल भी करते हैं। इस पद का कार्य करने के लिये आपको दो गाँव मांजल तथा डुनडरा मिले हुए हैं।

दो उच्च पदाधिकारी यद्यपि वे किसी पद पर कार्य नहीं करते फिर भी वे खान्दानी कार्य किया ही करते हैं —

[१] बगड़ी के ठाकुर—आप जैतावत शाखा के प्रधान हैं सम्पूर्ण नए नरेश के राजगद्दी पर बैठने के अवसर पर नरेश के ललाट पर तिलक लगाने के आपके खास अधिकारी हैं। आप अपने अंगूठे से खून निकाल कर यह कार्य करते हैं और श्रीमान महाराजा की तलवार-बंधी भी करते हैं।

[२] गुरडीयार ग्राम के बारठ—महाराज के राजगद्दी पर बैठने के अवसर पर तथा विवाह आदि के अवसर पर आपको ईश्वर की प्रार्थना कर आशीर्वाद की मंगनी करनी पड़ती है जिस सेवा के उपलक्ष में आपको इज्ज़त का एक चोंगा तथा एक हाथी दरबार की ओर से प्राप्त होता है।

ख, ग, घ, में जिनका ऊपर वर्णन किया गया है, उनकी पाँच श्रेणियाँ हैं।

[१] हाथ का कुरब तथा दोहरी ताज़ीम।

[२] हाथ का कुरब तथा एकहरी ताज़ीम।

[३] बाँह पसाव तथा दोहरी ताज़ीम।

[४] बाँह पसाव तथा एकहरी ताज़ीम।

[५] इकहरी ताज़ीम।

का खिराज या लगान भी अदा करना पड़ता है, जो भूमबाब कहा जाता है। भूम जगह की स्वीकृति दरबार से होती है। इस प्रकार के पट्टे उन गाँवों तक में किए जा सकते हैं, जो जागीरदारों पास में हैं

जीविकावाले पट्टे—इस प्रकार के पट्टे राजा या ठाकुरों के छोटे भाइयों को अपनी या अपने वंशजों के परवरिश के लिये मिलते हैं। तीन पीढ़ी के बाद ऐसे पट्टे के अधिकारियों को रेख तथा उत्तराधिकार का रसूम अदा करना पड़ता है और साधारण जागीरदार की देश रक्षा के लिये सिपाहियों को भी देना पड़ता है साथ में जब वंशजों की परम्परा टूट जाती है तो वह भूमि पट्टा लिखनेवाले के घराने में चली जाती है

जागीरवाले पट्टे—इस प्रकार के पट्टे, जिनके पास में रहते हैं उनको देश-रक्षा के महसूल को जो रेख कहलाता है, अदा करना पड़ता है जो अनुमानतः आमदनी का आठ प्रतिशत लगता है। साथ ही उनके प्रति एक हजार रुपयों की वार्षिक आमदनी पर एक घुड़-सवार ७५०) की वार्षिक आमदनी पर एक ऊँट-सवार या ६००) वार्षिक आय पर एक पैदल आदमी राज्य को देना पड़ता है बहुत-से स्थानों में इस प्रथा को बदल कर नक़दी रुपए भी अदा करने का रिवाज चल पड़ा है, जिसमें एक घुड़-सवार के बदले में १४४) एक ऊँट-सवार के लिये १०८) तथा पैदल एक आदमी के लिये ८४) साल और अदा करना पड़ता है।

का खिराज या लगान भी अदा करना पड़ता है, जो भूमबात्र कहा जाता है। भूम जगह की स्वीकृति दरबार से होती है। इस प्रकार के पट्टे उन गाँवों तक में किए जा सकते हैं, जो जागीरदारों के पास में हैं।

जीविकावाले पट्टे—इस प्रकार के पट्टे राजा या ठाकुरों के छोटे भाइयों को अपनी या अपने वंशजों के परवरिश के लिये मिलते हैं। तीन पीढ़ी के बाद ऐसे पट्टे के अधिकारियों को रेख तथा उत्तराधिकार का रसूम अदा करना पड़ता है और साधारण जागीरदार की देश रक्षा के बदले सिपाहियों को भी देना पड़ता है साथ में जब वंशजों की परम्परा टूट जाती है तो वह भूमि पट्टा लिखनेवाले के घराने में चली जाती है।

जागीरवाले पट्टे—इस प्रकार के पट्टे जिनके पास में रहते हैं उनको देश-रक्षा के महसूल को जो रेख कहलाता है, अदा करना पड़ता है जो अनुमानतः आमदनी का आठ प्रतिशत लगता है। साथ ही उनके प्रति एक हजार रुपयों की वार्षिक आमदनी पर एक घुड़-सवार ७५०) की वार्षिक आमदनी पर एक ऊँट-सवार या ६००) वार्षिक आय पर एक पैदल आदमी राज्य को देना पड़ता है बहुत-से स्थानों में इस प्रथा को बदल कर नक़दी रुपए भी अदा करने का रिवाज चल पड़ा है, जिसमें एक घुड़-सवार के बदले में १२४) एक ऊट-सवार के लिये १०८) तथा पैदल एक आदमी के लिये ८४) साल और अदा करना पड़ता है।

उत्तराधिकार के समय पर हुकुमनामा अदा करना पडता है, जिसके लिये जागीर के मालिक का नकदी रसूम अदा करने के समय रेख का ७५ प्रति सैकड़ा के हिसाब से अदा करना पडता है अन्यथा उन्हें अपने गाँव को एक साल के लिये खालसा को उनके रसूम की वसूली करने के लिये हस्तांतरित करना पडता है जब उत्तराधिकार का रसूम अदा हो जाता है तब दरबार की ओर से एक पट्टा दिया जाता है कचहरियों के कानूनी सम्मन के लिये आज्ञा भंग करने पर जमानती हुकुम के प्रति लापरवाही दिखाने पर तथा भारी राजविद्रोही कार्य या जुर्म करने पर ऐसे जागीर के पट्टे राज्य की ओर से जब्त भी कर लिये जा सकते हैं। प्रारम्भ में जिनको जागीर दी गई है, उनके कोई पुरुष वारिस के न रहने अर्थात् भावी वारिस की रुकावट पड़ जाने पर इस प्रकार के पट्टे का जागीर राज्य को वापस मिल जाता है।

दान-पत्र—ब्राह्मण तथा चारण आदि को जो दानपत्र दिए जाते हैं, वे सासण पुकारे जाते है, उसके लिये किसी भी प्रकार की मालगुजारी आदि देना नहीं पड़ता। जब कभी किसी प्रकार से एक गाँव का कोई भाग, एक कुआँ या कोई खेत का दान-पत्र दिया जाता है, तब ऐसे दानपत्रों को यहाँ डोली कहते हैं। जब दानपत्र जिनको प्रारम्भ में दिया गया रहता है और उनके वंश में पुरुष सन्तान के न रहने के कारण वारिस कोई नहीं रहता, तब इस प्रकार के दानपत्र वाले गाँव, खेत या कुएं राज्य में मिला लिए जाते हैं।

जूनी जागीर—जागीर के जब्त कर लेने पर यदि दरबार ऐसे जागीरदारों को बर्बादी से बचाना चाहते हैं तो उनकी परवरिश के लिये उनके पास कुछ खेत आदि जो छोड़ देते हैं वही जूनी जागीर के पट्ट कहे जाते हैं। आज्ञा भङ्ग या राजनैतिक कोई भारी जुर्म करने पर उनकी जब्ती भी होती है।

पसायत—यह वह पट्टा है, जो किसी प्रकार की सेवा करने के एवज में जो जमीन दी जाती है, वह पसायत कहलाती है और पट्टे को पसायत पट्टा कहते है जब इस प्रकार की भूमि पानेवाला काम करना बन्द कर देता है तब यह ज़मीन वापस भी कर ली जाती है।

इनाम—यह भी वाली मजूरियाँ हैं जो राज्य की किसी प्रकार की सेवा करने के उपलक्ष में प्रदान करने में आती है प्रारम्भ में जिनको इस प्रकार के इनाम पर जमीन आदि मिली हुई रहती है उनके वंशजो की परम्परा रुक जाने पर ऐसे पट्टे राज्य को वापस हो जाते हैं।

दुम्बा पट्टे—इस प्रकार के पट्टों पर काश्तकारो को इस्तिमुरारी मालगुजारी पर जमीन दी जाती हैं इसलिये किसी प्रकार की सेवा आदि करना जरूरी नहीं हुआ करता।

जागीर तथा जीविका—इस्टेटों में उत्तराधिकार पद का प्राप्त होता है किंतु दूसरे सभी प्रकार की जमीन के लिए सभी का बराबर-बराबर हिस्सा मिला करता है किसी प्रकार की जमीन बेची नहीं जा सकती और ८० वर्ष से ज्यादा के समय के लिए रेहन भी नहीं रखी जा सकती।

जूनी जागीर—जागीर के जब्त कर लेने पर यदि दरबार ऐसे जागीरदारों को बर्बादी से बचाना चाहते हैं तो उनकी परवरिश के लिये उनके पास कुछ खेत आदि जो छोड़ देते हैं वही **जूनी जागीर** के पट्ट कहे जाते हैं। आज्ञा भङ्ग या राजनैतिक कोई भारी जुर्म करने पर उनकी जब्ती भी होती है।

पसायत—यह वह पट्टा है, जो किसी प्रकार की सेवा करने के एवज में जो जमीन दी जाती है, वह **पसायत** कहलाती है और पट्टे को **पसायत पट्टा** कहते है जब इस प्रकार की भूमि पानेवाला काम करना बन्द कर देता है तब यह **ज़मीन** वापस भी कर ली जाती है।

इनाम—यह माफी वाली मजूरियाँ हैं जो **राज्य की किसी** प्रकार की सेवा करने के उपलक्ष में प्रदान करने में आती हे प्रारम्भ में जिनको इस प्रकार के **इनाम** पर जमीन आदि मिली हुई रहती है उनके वशजो की परम्परा रुक जाने पर ऐसे पट्टे राज्य को वापस हो जाते हैं।

दुम्बा पट्टे—इस प्रकार के पट्टों पर काश्तकारो को **इस्तिमुरारी मालगुजारी** पर जमीन दी जाती हैं। इस लिये किसी प्रकार की सेवा आदि करना जरूरी नहीं हुआ करता।

जागीर तथा जीविका—इस्टेटों में उत्तराधिकार वर्ग का प्राप्त होता है किंतु दूसरे सभी प्रकार की जमीन के लिए सभी को बराबर-बराबर हिस्सा मिला करता है किसी प्रकार की जमीन बेची नहीं जा सकती और ८० वर्ष से ज्यादा के समय के लिए रेहन भी नहीं रखी जा सकती।

(क) महाराज देवीसिंह-आप इस समय राज्य के फोर्ट आफिसर भी हैं।

(२) महाराज अक्षयसिंह—आप सन १८७९ ई० में पैदा हुए हैं। आपने जोधपुर के नोबुल स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। ९ जनवरी सन १८९८ में कमीशन्ड आफिसर के पद पर सरदार रिसाला में आप प्रथम भर्ती किए गए थे। सन १९०० में आपने हिज़ हाईनेस दी महाराजा सर प्रतापसिंह बहादुर के साथ स्टाफ आफिसर बनकर चाइना एक्सपेडीशनरी फोर्स का साथ भी दिया था। आप कुछ समय तक गवर्नर जनरल के राजपूताना के आनरेकुल एजेंट के एडीकांग भी रहे थे। आप गत यूरोपीय महासमर के समय फ्रांस में स्वयं उपस्थित रहकर सैनिक सेवाएं भी की थीं।

[ख] महाराज किशोरसिंह—आप एक पुत्र छोड़ गए थे जिनका नाम उर्जनसिंह था। आप भी १ ला फरवरी सन १९३३ ई० को स्वर्गवासी हो गए। जिनके बाद उनके पुत्र महाराज भीमसिंह जागीर के उत्तराधिकारी हुए। जिनमे तीन गाँव हैं और उनकी वार्षिक आय ३५ हजार रुपयों की है।

[ग] महाराज भूपालसिंह—को तीन पुत्र थे —

(१) महाराज दौलतसिंह—आप ईडर राज्य के उत्तराधिकारी हुए थे। आप १४ वीं अगस्त सन १९३१ ई० को स्वर्गवासी हो गए। आपके बाद आपके पुत्र हिज़ हाईनेस महाराजा हिम्मतसिंह ईडर राज्य के उत्तराधिकारी बने हैं।

(फ) महाराज देवीसिंह-आप इस समय राज्य के फोर्ट आफिसर भी हैं।

(२) महाराज अक्षयसिंह—आप सन १८७९ ० मे पैदा हुए हैं। आपने जोधपुर के नोबुल स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है जनवरी सन १८९६ में कमीशन्ड आफिसर के पद पर सरदार रिसाला में आप प्रथम भर्ती किए गए थे। सन १९०० मे आपने हिज़ हाईनेस दी महाराजा सर प्रतापसिंह बहादुर के सा। स्टाफ़ आफिसर बनकर चाइना एक्सपेडीशनरी फोर्स का साथ भी दिया था आप कुछ समय तक गवर्नर जनरल के राजपूताना के आनरेकुल एजेंट के एडेका भी रहे थे आप। गत यूरोपीय महासमर के समय फ्रान्स मे स्वय उपस्थित रहकर सैनिक सेवाएं भी क थीं

[ख] महाराज किशोरसिंह—आप एक पुत्र छोड़ गए थे जिनका नाम उर्जनसिंह था आप भी ला फरवरी सन १९३३ ई० को स्वर्गवासी हो गए जिनके बाद उनके पुत्र महाराज भीमसिंह जागीर के उत्तराधिकारी हुए जिनमे तीन गाँव हैं और इनकी वार्षिक आय ३५ हजार रुपयों की है।

[ग] महाराज भूपालसिंह—को तीन पुत्र थे —

(१) महाराज दौलतसिंह—आप ईडर राज्य के उत्तराधिकारी हुए थे आप ४ थी अगस्त सन १९३१ ई० को स्वर्गवासी हो गए। आपके बाद आपके पुत्र हिज़ हाईनेस महाराजा हिम्मतसिंह ईडर राज्य के उत्तराधिकारी बने हैं।

१६१८ ई० तक कार्य किया था। इसके बाद आप सुमेर कैमेल कार्प्स के आफ़िसर कमांडिंग बनाए गए थे जिस पद पर आपने ३१वीं अक्टूबर सन १९२२ ई० तक कार्य किया, जब कि वह पद तोड देने में भी आया था। १ एप्रिल सन १९२८ ई० से आप वर्तमान हिज़ हाईनेस के ए० डी० सी० भी नियुक्त किए गए है।

(२) महाराज विजयसिंह—आपके पास १२००० वार्षिक आय के तीन गांव रेख पर हैं इसके अलावा ५ हजार का एक नकद भत्ता आपको जीवन भर के लिये भी नियत किया गया है

३ महाराज हनवन्तसिंह—आपने कैंट (इङ्गलैंड) में रहकर कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त की है सन १९१४ ई० में आप वहां से वापस लौटे हैं, तुरन्त आप डिपुटी इन्स्पेक्टर जनरल आफ ईस्टेट पुलीस के पद पर नियुक्त भी किए गए। इस समय आप महाराजकुमार श्री हनवन्तसिंह (युवराज साहब) के गार्जियन है।

महाराज गजसिंह—आप जोधपुर इम्पीरियल सरविस लांसर्स के कैप्टेन स्क्वाड्रन आफ़िसर के पद पर भी रहे। आपने गत यूरोपीय महासमर में भी फ्रांस के मैदान में सेवा भी की थी इस समय पेन्शन आप प्राप्त कर रहे हैं।

श्रीमान हिज़ हाईनेस महाराजा बहादुर के दो जानाय चाचा बहादुर भी हैं, जिनके नाम राव राजा सवाईसिंह तथा

(३) भतीजी–हिज लेट हाईनेस महाराजा सर सुमेरसिंह की राजकुमारी का विवाह जयपुर के वर्तमान नरेश कैप्टन हिज़ हाईनेस राज-राजेंद्र श्री महाराजा सर सवाई मानसिंह बहादुर जी० सी० आई० ई० के साथ २४ वीं एप्रिल सन १९३२ ई० को सम्पन्न हुआ है, जिनसे आपको एक राजकुमार महाराजकुमार जयसिंह बहादुर इङ्गलैंड में ५ वीं मई सन १९३३ ई० को पैदा हुए हैं। इनके अलावा एक दूसरे राजकुमार १ ली दिसम्बर सन १९३५ ई० को भी पैदा हुए हैं।

ठिकानेदार तथा सरदार आदि

पोकरण

रावबहादुर ठाकुर चैनसिंह एम० ए०, एल० एल० बी०—आप राव जोधाजी के भाई चम्पा के वंशज चम्पावत शाखा के राठौर वंशी राजपूत हैं। सन १७२८ ई० में इस इस्टेट को प्रारम्भ में महाराजा अभयसिंह ने महासिंह को मंजूर की थी। यह राज्य की एक जागीर है। जोधपुर के उत्तर-पश्चिम में ९० मील की दूरी पर यह स्थित है। इसमें १०० गाँव हैं, जिनकी वार्षिक आय एक लाख रुपयों की है यहां यह बात खास तौर से ध्यान देने की है कि इनमें कुछ गाँव जो इस इस्टेट के पट्टे में तो शरीक कर लिये गये हैं किन्तु वे ठिकाने के अन्तर्गत नहीं आते। श्रीमान ठाकुर चैनसिंह स्वर्गीय राव बहादुर ठाकुर मंगलसिंह सी० आई० ई० के पुत्र हैं जिनको पोकरण के ठाकुर गुमानसिंह ने दसपान घराने से दत्तक लिया

(३) भतीजी—हिज़ लेट हाईनेस महाराजा सर सुमेरसिंह की राजकुमारी का विवाह जयपुर के वर्तमान नरेश कैप्टन हिज़ हाईनेस राज-राजेंद्र श्री महाराजा सर सवाई मानसिंह बहादुर जी० सी० आई० ई० के साथ २४ वीं एप्रिल सन १९३२ ई० को सम्पन्न हुआ है, जिनसे आपको एक राजकुमार महाराजकुमार जयसिंह बहादुर इङ्गलैंड में ५ वीं मई सन १९३३ ई० को पैदा हुए हैं। इनके अलावा एक दूसरे राजकुमार १ ली दिसम्बर सन १९३५ ई० को भी पैदा हुए हैं।

ठिकानेदार तथा सरदार आदि

पोकरण

रावबहादुर ठाकुर चैनसिंह (मृ० १० । १९० । १९ वा०—आप राव जोधाजी के भाई चम्पा के वंशज चम्पावत शाखा के राठौर वंशी राजपूत हैं। सन १७२८ ई० में इस इस्टेट को प्रारम्भ में महाराजा अभयसिंह ने महासिंह को मंजूर की थी। यह राज्य की एक जागीर है। जोधपुर के उत्तर-पश्चिम में ९० मील की दूरी पर यह स्थित है। इसमें १०० गाँव हैं, जिनकी वार्षिक आय एक लाख रुपयों की है। यहां यह बात खास तौर से ध्यान देने की है कि इनमें कुछ गाँव जो इस इस्टेट के पट्टे में तो शरीक कर लिये गये हैं किन्तु वे ठिकाने के अन्तर्गत नहीं आते। श्रीमान ठाकुर चैनसिंह स्वर्गीय राव बहादुर ठाकुर मंगलसिंह सी० आई० ई० के पुत्र हैं जिनको पोकरण के ठाकुर गुमानसिंह ने दसपान घराने से दत्तक लिया

मजूर करने की कृपा की थी। लम्ब्रिया तथा सेहत ० घराने इस इस्टेट ० अधिकारियों के नजदीकी सम्बन्धी होते हैं। श्रीमान ठाकुर साहब ने अजमेर के मेयो कालेज मे शिक्षा पाप्त की है।

आमोप

रावबहादुर श्रीमान फते सिंह—आप राव जोधाजी ० भा कम्पा ० वंशजों मे-से हैं। आपकी इस्टेट राज्य की एक जागीर है यह जोधपुर के उत्तर-पूर्व की दिशा मे ० माल की दूरी पर स्थित है और इसमे सात गाँव सम्मिलित है। इनकी वार्पिक आय ३० हजार रुपयों के लगभग की है ४ थ नवम्बर सन १८८५ ई० मे अपने पिता के स्वर्गवासी हो जाने पर श्रीमानजी अपन इस्टेट के उत्तराधिकारी हुए हैं प्रारम्भ मे सन १७२५ ई० मे महाराजा अभयसिंह ने कर्नीराम का इस इस्टेट को मजूरी दी थी श्रीमान ठाकुर साहब अपने पिता स्वर्गीय रावबहादुर ठाकुर चैनसिंह ० एक मात्र पुत्र हैं। स्व० राव बहादुर ठाकुर चैनसिंह साहब स्व० हिज हाईनेस महाराजा सर जसवन्तसिंह तथा हिज हाईनेस महाराजा सर सरदारसिंह के जमाने मे स्टेट काउंसिल ० सदस्य भी रहे थ। हिज़ लेट हाईनेस सर सुमेरसिंह की नाबालिगी के समय मे एडवाइज़री काउंसिल के भी आप एक सदस्य थे। श्रीमान वर्तमान ठाकुर साहब का जन्म सन १८८१ ई० को हुआ है। आपको देवीसिंह नामक एक पुत्र २४ वीं अक्टूबर सन १९२७ ई० को पैदा हुए हैं। बृटिश-सरकार ने श्रीमान ठाकुर

ई० में आप दत्तक व जारिए इस इस्टेट के उत्तराधिकारी बना गए हैं आपके पास के सम्बन्धी आपके चाचा पीरदान जो, जलसू के जागीरदार तथा रीयाँ के जागीरदार हैं। श्रीमान ठाकुर गोविन्दसिंह—राव शुजाजी के छोटे पुत्र ऊदाजी के आप वंशजों में से हैं आपकी इस्टेट राज्य की एक जागीर है, जिसमें १७॥ गाँव हैं, जो जोधपुर के पूरब ६४ मील की दूरी पर है और जिनकी वार्षिक आय ८० हजार रुपयों की है। इस इस्टेट को प्रारम्भ में सन १०६ ० में सवाई राजा सूरसिंह ने कल्याणसिंह को मंजूर करने की कृपा की थी ठाकुर गोविन्दसिंह का जन्म सन १९०३ ई० में हुआ है। आप स्व० ठाकुर हरिसिंह के भतीजे तथा दत्तक पुत्र हैं। सन १९०६ ई० में आप अपनी इस्टेट के उत्तराधिकारी हुए हैं। आपके सबसे पास के सम्बन्धी आपके चाचा जोरावरसिंह और सोहनसिंह तथा चचेरे भाई शिवदानसिंह और गुमानसिंह हैं। रामपुरा, लीलांवा तथा मेलावास के घराने भी रायपुर के घराने वालों के पास के सम्बन्धी होते हैं। श्रीमान वर्तमान ठाकुर साहब को सज्जनसिंह नामक एक पुत्र ११ वीं जनवरी सन १९२४ ० को पैदा हुए हैं।

निमवाज

ठाकुर उम्मेदसिंह—आप राव शुजा के छोटे पुत्र ऊदा के वंशजों में से हैं। आप भी राज्य के एक जागीरदार हैं। आपकी जागीर में ग्यारह गाँव हैं, जो जोधपुर के दक्षिण-पूरब में १०

खेरवा

श्रीमान ठाकुर शिवदानसिंह—आप राठौरवंशी राजा उदयसिंह के छोटे पुत्र भगवानदास के वंशजों में-से हैं। आपके पास राज्य की ओर से जागीर है, जिसमें ११ गाँव हैं, जो जोधपुर के दक्षिण पूरब की दिशा में ५० मील की दूरी पर है। इनकी वार्षिक आय ३० हजार रुपयों की है ऐसा कहा जाता है कि प्रारम्भ में यह इस्टेट सन १६५७ ई० में महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम ने रणछोड़दास को मंजूर की थी। ये रणछोड़दास वे ही है, जो दिल्ली में लड़ते हुए सन १६७९ ई० में मारे गए थे वर्तमान ठाकुर साहब सन १९०९ ई० में पैदा हुए हैं। अपने पिता फतेहसिंह के २२ वीं जनवरी सन १९२७ ई० को स्वर्गवासी हो जाने पर आप इस इस्टेट के उत्तराधिकारी हुए हैं। श्रीमान ठाकुर साहब के नजदीकी सम्बन्धियों में इनके सगे भाई लालसिंह हैं, उसके बाद में खेरवा के नाथूसिंह हैं। इसके अतिरिक्त आप विलाड़ा, वूटीस तथा ववरा के घराने वालों के भी सम्बन्धित है।

भद्राजन

श्रीमान ठाकुर देवीसिंह—राव मालदेवजी के छोटे पुत्र रतनसी के वंशजों में-से आप है। आपका जन्म सन १९०२ ई० में हुआ है और सन १९०६ ई० में स्व० ठाकुर शिवदानसिंह के आप उत्तराधिकारी हुए हैं। आपकी इस्टेट में २७ गाँव है, जो जोधपुर के दक्षिण में

खेरवा

श्रीमान ठाकुर शिवदानसिह—आप राठौरवशी राजा उदयसिह के छोटे पुत्र भगवानदास के वशजों में-से हैं। आपके पास राज्य की ओर से जागीर है, जिसमे ११ गाँव हैं, जो जोधपुर के दक्षिण पूरब की दिशा में ५० मील की दूरी पर हैं। इनकी वार्षिक आय ३० हजार रुपयों की है ऐसा कहा जाता है कि प्रारम्भ में यह इस्टेट सन १६५७ ई० में महाराजा जसवन्तसिह प्रथम ने रणछोड़दास को मजूर की थी। ये रणछोड़दास वे ही है, जो दिल्ली में लड़ते हुए सन १६७९ ई० में मारे गए थे। वर्तमान ठाकुर साहब सन १९०९ ई० में पैदा हुए हैं। अपने पिता फतेहसिंह के २२ वीं जनवरी सन १९२७ ई० को स्वर्गवासी हो जाने पर आप इस इस्टेट के उत्तराधिकारी हुए हैं। श्रीमान ठाकुर साहब के नजदीकी सम्बन्धियों में उनके सगे भाई लालसिह हे, उसके बाद वे खेरवा के नाथूसिह है। इसके अतिरिक्त आप बिलाड़ा, वूटीस तथा बबरा के घराने वालों के भी सम्बन्धित है।

भद्राजन

श्रीमान ठाकुर देवीसिह—राव मालदेवजी के छोटे पुत्र रतनसी के वंशजों में-से आप है। आपका जन्म सन १९०२ ई० में हुआ है और सन १९०६ ई० में स्व० ठाकुर शिवदानसिह के आप उत्तराधिकारी हुए हैं। आपकी इस्टेट में २७ गांव है, जो जोधपुर के दक्षिण में

दरबार में यहाँ के ठाकुरों के लिये सोला सरदारों की श्रेणी में पाँचवाँ स्थान निश्चित था, जो अब भी खाली पड़ा रहता है। जब गोंढ़ार मेवाड़वालों के हाथों से मारवाड़ के नरेशों के हाथ में आया था, उस समय यहाँ के ठाकुर वीरमदेव थे। सन १७७२ ई० में महाराजा विजयसिंह ने उनके अधिकार की मंजूरी देने की कृपा की थी

वागड़ी

श्रीमान ठाकुर भैरोंसिंह–आप राठौरवंशी जैतावत शाखा के राजपूत हैं, जो अपने को जैतसिंह के वंशजों में बतलाते हैं। ये अक्षयराज के पौत्र थे, जिनको प्रारम्भ में सन १४६१ ई० में उनके भाई राव जोधाजी ने इस इस्टेट की मंजूरी की थी। आपके पास सात गाँवों की एक जागीर है जिनकी वार्षिक आय १५ हजार रुपयों की है। श्रीमान वर्तमान ठाकुर साहब का जन्म सन १८९५ ई० में हुआ है और ठाकुर जीवनसिंह के स्वर्गवास हो जाने पर आपको सन १९१५ ई० में दत्तक लेकर इस इस्टेट का उत्तराधिकारी बनाया गया था। श्रीमान ठाकुर साहब को श्री सज्जनसिंह नामक एक पुत्र है, जिनका जन्म सन १९१६ ई० में हुआ है

खिनवासर

ठाकुर केसरीसिंह–आप राठौरवंश के करमसोत शाखा के राजपूत है, जो राव जोधाजी के पुत्र करमसी के वंशज है।

जिनकी वार्षिक आय १६ हजार रुपयों की है प्रारम्भ में सन १६४५ ई० में महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम ने भाऊसिंह को जागीर मजूर करने की कृपा की थी। वर्तमान ठाकुर साहब का जन्म सन १८६१ ई० में हुआ है। स्व० ठाकुर गोवर्धनसिंह के आप सन १८८६ ई० में दत्तक द्वारा इस स्टेट के उत्तराधिकारी बने हैं। आप प्रारम्भ में दूडोर घराने के थे आपके पास के सम्बन्धी सरदार-पुरा के श्री जवाहिरसिंह हैं। आप चन्दावल और आसोप घरानों से सम्बन्धित हैं।

कुचामन

श्रीमान ठाकुर हरिसिंह—आप मेरटिया-राठौरवंशी राजपूत हैं। स्व० ठाकुर ज़ोरावरसिंह के वशज हैं जिनको महाराजा अभयसिंह ने सन १७२७ ई० में इस इस्टेट को मजूर करने की कृपा की थी। यह इस्टेट इस राज्य की जागीर है। इसमें १६ गाँव हैं जो जोधपुर के उत्तर-पूरब की दिशा में कई जिलों में हैं इनकी वार्षिक आमदनी १ लाख रुपयों की है श्रीमान वर्तमान ठाकुर साहब का जन्म २६ वीं दिसम्बर सन १८९० ई० को हुआ है। आप अपने पिता नाहरसिंह के २५ वीं जनवरी सन १८९६ ई० को स्वर्गवासी हो जाने पर अपनी इस्टेट के उत्तराधिकारी हुए हैं। आपको एक पुत्र भी है यह घराना निम्बी, डोडियाना तथा लापोलाई घरानों से सबधित है।

रेड़ा

श्रीमान ठाकुर जङ्गजीतसिंह—आप राणावत शाखा के

जिनकी वार्षिक आय १६ हजार रुपयों की है प्रारम्भ में सन १६५४ ई० में महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम ने भाऊसिंह को जागीर मंजूर करने की कृपा की थी। वर्तमान ठाकुर साहब का जन्म सन १८६? ई० में हुआ है। स्व० ठाकुर गोवर्धनसिंह के आप सन १८८६ ई० में दत्तक द्वारा इस स्टेट के उत्तराधिकारी बने हैं। आप प्रारम्भ में दूजोर घराने के थे आपके पास के सम्बन्धी सरदारपुरा के श्री जवाहिरसिंह हैं। आप चन्दावल और आसोप घरानों से सम्बन्धित हैं।

कुचामन

श्रीमान ठाकुर हरिसिंह—आप मेरटिया-राठौरवंशी राजपूत हैं। आप ठाकुर ज़ोरावरसिंह के वंशज हैं जिनको महाराजा अभयसिंह ने सन १७२७ ई० में इस इस्टेट को मंजूर करने की कृपा की थी। यह इस्टेट इस राज्य की जागीर है। इसमें १६ गाँव हैं जो जोधपुर के उत्तर-पूरब की दिशा में कई जिलों में हैं इनकी वार्षिक आमदनी १ लाख रुपयों की है श्रीमान वर्तमान ठाकुर साहब का जन्म २६ वीं दिसम्बर सन १६१० ई० को हुआ है। आप अपने पिता नाहरसिंह के २५ वीं जनवरी सन १६१६ ई० को स्वर्गवासी हो जाने पर अपनी इस्टेट के उत्तराधिकारी हुए हैं। आपको एक पुत्र भी है यह घराना निम्बी, डोढियाना तथा लापोलाई घरानों से सबंधित है।

बेड़ा

श्रीमान ठाकुर जङ्गजीतसिंह—आप राणावत शाखा के

गाँवों जमनगर, सरदारगढ़ तथा गोल की जागीर मंजूर की थी, साथ ही आपको हाथ का कुरब तथा दोहरी ताजीम का सामान भी प्रदान किया गया था। पं० धरमनारायण साहब ने मेवाड़ में दीवान के पद पर जाने के पूर्व जोधपुर राज्य में सुपरिटेंडेंट कोर्ट आफ़ वार्ड्स, सेशन्स जज के पदों पर भी कार्य किया था। उदयपुर मेवाड़ में आप स्टेट काउंसिल के मेम्बर तथा प्रधान मन्त्री के पदों पर कार्य किया था। इस समय आप जोधपुर-सरकार के डिपुटी प्राइम मिनिस्टर के पद पर हैं। आपको मेवाड़ में भी एक जागीर मिली हुई है। दीवान बहादुर की उपाधि आपको ३ री जून सन १९३१ ई० में प्रदान की गई है तथा सी० आई० ई० आप १ ली जनवरी सन १९३८ ई० में बनाए गए हैं।

आपके तीन पुत्र हैं, जिनमें बड़े किशनप्रसाद हैं, जो इस समय इङ्गलैंड में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इनके अलावा आपके दो छोटे भाई पं० कृपानारायण तथा पं० जयनाथ भी हैं।

गोराऊ

श्रीमान ठाकुर शेरसिंह—गोराऊ के स्व० रावबहादुर ठाकुर दौलतसिंह ओ० बी० ई० के आप दत्तक के जरिए उत्तराधिकारी हुए हैं। यह इस्टेट राज्य की एक जागीर है। इसके अन्तर्गत तीन गाँव हैं, जिनकी वार्षिक आय १२ हजार रुपयों की है।

रोहट

राव बहादुर लेफ्टीनेंट कर्नल ठाकुर दलपतसिंह—आप

गाँवों जमनगर, सरदारगढ़ तथा गोल की जागीर मंजूर की थी, साथ ही आपको हाथ का कारव तथा दोहरी ताज़ीम का सामान भी प्रदान किया गया था। प० धरमनारायण साहब ने मेवाड़ में दीवान के पद पर जाने के पूर्व जोधपुर राज्य में सुपरिटेंडेंट कोर्ट आफ़ वार्ड्स, सेशन्स जज के पदों पर भी कार्य किया था। उदयपुर-मेवाड़ में आप स्टेट काउन्सिल के मेम्बर तथा प्रधान मन्त्री के पदों पर काय किया था। इस समय आप जोधपुर-सरकार के डिपुटी प्राइम मिनिस्टर के पद पर हैं। आपको मेवाड़ में भी एक जागीर मिली हुई है। दीवान बहादुर की उपाधि आपको ३ री जून सन १९३१ ई० में प्रदान की गई है तथा सी० आई० ई० आप १ ली जनवरी सन १९३८ ई० में बनाए गए हैं।

आपका तीन पुत्र हैं, जिनमें बड़े किशनप्रसाद हैं, जो इस समय इङ्गलैंड में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इनके अलावा आपके दो छोटे भाई प० कृपानारायण तथा प० जयनाथ भी हैं

गोराऊ

श्रीमान ठाकुर शेरसिंह—गोराऊ के स्व० रावबहादुर ठाकुर दौलतसिंह ओ० बी० ई० के आप दत्तक के जरिए उत्तराधिकारी हुए हैं यह इस्टेट राज्य की एक जागीर है इसके अन्तर्गत तीन गाँव हैं, जिनकी वार्षिक आय १२ हजार रुपयों का है

रोहट

राव बहादुर लेफ्टीनेंट कर्नल ठाकुर दलपतसिंह—आप

खानदानी पदाधिकारी गण

राव-राजा बहादुर माधोमल–आप सन १८७६ ई० में पैदा हुए हैं। आप प्रारम्भ में पाली, जोधपुर तथा जालोर के हाकिम के पद पर कार्य किया था। इस समय आप दरोगा-जनानी ड्योढी हैं। आपके पास २ गाँव की जागीर है, जिसकी वार्षिक आय ३ हजार रुपयों की है। आपको एकहरी ताज़ीम का अधिकार है। इसके अलावा आपको दरबार की ओर से सोने का एक कड़ा भी प्रदान किया गया है। दरबार ने आपको राव-राजा बहादुर की उपाधि से भी विभूषित भी किया है।

जोशी देवकरन–आप जोशी आसकरन के पौत्र हैं। जोशी आसकरन एक जमाने में राज्य के दीवान तथा स्टेट काउंसिल के एक सदस्य भी रहे। आपको दरबार से ताजीम तथा सोने का कड़ा भी प्रदान किया गया था। जोशी देवकरन इस समय इक्साइज़ इन्स्पेक्टर के पद पर हैं।

मेहता किशनमल–आप रायबहादुर मेहता विजयमल के पौत्र तथा मेहता सरदारमल के पुत्र हैं। उपरोक्त दोनों सज्जनों ने राज्य के दीवानी के पदों पर कार्य किया था। श्रीमान मेहता किशनमल ने सुपरिंटेंडेंट रेख-हुक्मनामा, स्टेट काउंसिल के होममेंबर के परसनल असिस्टेंट तथा जोधपुर के ट्रेजरर आफ़िसर के पदों पर कार्य किया है। आपके पास १ गाँव की जागीर है, जिसकी वार्षिक आय १ हजार रुपयों की है।

मिनिस्टर फॉर जस्टिस-दीवान बहादुर के० सी० मेनन बार ऐट लॉ।
असिस्टेंट टू फाईनेंस मिनिस्टर—मेजर एफ़० स्टोल, ओ० बी० ई० बी० ए० (आक्सन)
सेक्रेटरी स्टेट काउंसिल—लक्ष्मीनारायण काला।

(मोहकमा खास)

सेक्रेटरी टू दी पोलीटिकल डिपार्टमेंट—खाँ साहब टी० जी० दलाल
सेक्रेटरी फाइनेंस डिपार्टमेंट—रायसाहब भंडारी विलासचन्द।
सेक्रेटरी टू मिनिस्टर-इन-वेटिंग—श्री प्रेमनारायण सिनहा।
सेक्रेटरी इन रेवेन्यू डिपार्टमेंट—मि० वाहिदुल्ला खाँ।
सेक्रेटरी, पी० डबल्यु० डिपार्टमेंट—श्री भूपालचन्द (बी० काम)
सेक्रेटरी टू मिनिस्टर फार जस्टिस—श्री किशन पुरी बी० ए०, एल् -एल्० बी०।
सेक्रेटरी टू काउंसिलर टू हिज़ हाईनेस—श्री हरिश्चन्द बी० ए०

(एडवाइज़री काउंसिल)

अध्यक्ष—महाराजा श्री अजीतसिंह।
सदस्य गण—१—राव बहादुर ठाकुर नाथूसिंह आफ़ रास।
२—ठाकुर शेरसिंह आफ बालुन्दा।
३—ठाकुर देवीसिंह आफ भद्राजन।

सेंट्रल एडवाइज़री बोर्ड

अध्यक्ष—महाराजा श्री अजीतसिंह साहब।
मंत्री—श्री किशन पुरी बी० ए०, एल्-एल् बी०।

मिनिस्टर फॉर जस्टिस—दीवान बहादुर के० सी० मेनन बार-ऐट लॉ।

असिस्टेंट टू फाइनेंस मिनिस्टर—मेजर एफ़० स्टोक, ओ० बी० ई० बी० ए० (आक्सन)

सेक्रेटरी स्टेट काउंसिल—लक्ष्मीनारायण काला।

(मोहकमा खास)

सेक्रेटरी टू दी पोलीटिकल डिपार्टमेंट—खाँ साहब टी० जी० दलाल

सेक्रेटरी फाइनेंस डिपार्टमेंट—रायसाहब भंडारी विलामचन्द।

सेक्रेटरी टू मिनिस्टर-इन-वेटिंग—श्री प्रेमनारायण सिनहा।

सेक्रेटरी इन रेवेन्यू डिपार्टमेंट—मि० वाहिदुल्ला खाँ।

सेक्रेटरी, पी० डबल्यू० डिपार्टमेंट—श्री भूपालचन्द (बी० काम)

सेक्रेटरी टू मिनिस्टर फार जस्टिस—श्री किशन पुरी बी० ए०, एल्-एल्० बी०।

सेक्रेटरी टू काउंसिलर टू हिज़ हाईनेस—श्री हरिश्चन्द बी० ए०

(एडवाइज़री काउंसिल)

अध्यक्ष—महाराजा श्री अजीतसिंह।

सदस्य गण—१—राव बहादुर ठाकुर नाथूसिंह आफ़ रास

२—ठाकुर शेरसिंह आफ बालुन्दा।

३—ठाकुर देवीसिंह आफ भद्राजन।

सेंट्रल एडवाइज़री बोर्ड

अध्यक्ष—महाराजा श्री अजीतसिंह साहब।

मंत्री—श्री किशन पुरी बी० ए०, एल्-एल् बी०।

(कुछ पदाधिकारी विशेष)

स्टाफ़ आफ़िसर टू दी कमांडेंट

जोधपुर स्टेट फोर्सेज़—लेफ्टीनेंट कर्नल रावबहादुर राव-राजा सुजानसिंह ।

सुपरिंटेंडेंट, कोर्ट आफ़ वार्ड

स्टैंप तथा रजिस्ट्रेशन—राव-राजा मोहनसिंह बी० ए०, एल् एल० बी० ।

सुपरिंटेंडेंट, पुरातत्व विभाग—प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ ।

जालोर मारवाड़ का एक सुप्रसिद्ध किला तथा जिला है। इसमें इस समय में लगभग ३६० कस्बे थे। उस स्थान पर तत्कालीन चौहान सेनागारा राजपूत नरेश वीशलदेव के यहाँ आपने नौकरी कर ली।

मंदोर के राठौर नरेश ने जब वीशलदेव की हत्या कर दी थी, मलिक खुर्रमखाँ उस समय में जालोर के नायब शासक थे, उन्होंने उनकी विधवा महारानी पोपनबाई को राजगद्दी पर बैठाने की कृपा की। किन्तु महारानी को अन्य षड्यन्त्रकारियों ने, जो मलिक खुर्रमखाँ को उन्नति से जलते थे उसके खिलाफ महारानी को उभाड़ना प्रारम्भ कर दिया। जिसका फल यह निकला कि मलिक खुर्रमखाँ को कैद कर लेने का महारानी ने आर्डर दे दिया। मलिक खुर्रमखाँ को इस षड्यन्त्र का पहले ही पता लग गया था। इस कारण उसने उस महल को घेर लिया और वहीं पोपनबाई अपने साथियों के साथ कत्ल कर दी गई। इस प्रकार यहाँ की राजगद्दी शासक रहित हो गई। तब सन १३९४ ई० में इस खाली राजगद्दी पर मलिक खुर्रमखाँ ने अपना आधिपत्य कायम किया।

मलिक खुर्रमखाँ के बाद उनके पुत्र मलिक यूसुफ खाँ इस राज्य की राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए मलिक यूसुफ खाँ के बाद उनके पुत्र मलिक हुसैनखाँ उत्तराधिकारी हुए थे आपने अपने राज्य के विस्तार को बढ़ाया भी था। उन्हीं के समय में गुजरात के सम्राट ने मलिक खुर्रमखाँ को जालोर का अधिकारी भी मान लिया था।

जालोर मारवाड का एक सुप्रसिद्ध किला तथा जिला है। इसमें उस समय में लगभग ३६० कस्बे थे। उस स्थान पर तत्कालीन चौहान सैनागारा राजपूत नरेश वीशलदेव के यहाँ आपने नौकरी कर ली।

मंदोर के गम्भीर नरेश ने जब वीशलदेव की हत्या कर दी थी, मलिक खुर्रमखाँ उस समय में जालोर के नायब शासक थे, उन्होंने उनकी विधवा महारानी पोपनबाई को राजगद्दी पर बैठाने की कृपा की। किन्तु महारानी को अन्य षड्यन्त्रकारियों ने, जो मलिक खुर्रमखाँ की उन्नति से जलते थे उसके खिलाफ महारानी को उभाड़ना प्रारम्भ कर दिया। जिसका फल यह निकला कि मलिक खुर्रमखाँ को कैद कर लेने का महारानी ने आर्डर दे दिया। मलिक खुर्रमखाँ को इस षड्यन्त्र का पहले ही पता लग गया था। इस कारण उसने उस महल को घेर लिया और वहीं पोपनबाई अपने साथियों के साथ कत्ल कर दी गई। इस प्रकार यहाँ की राजगद्दी शासक रहित हो गई। तब सन १२९४ ई० में इस खाली राजगद्दी पर मलिक खुर्रमखाँ ने अपना आधिपत्य कायम किया।

मलिक खुर्रमखाँ के बाद उनके पुत्र मलिक यूसुफ खाँ इस राज्य की राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए मलिक यूसुफ खाँ के बाद उनके पुत्र मलिक हुसैनखाँ उत्तराधिकारी हुए थे आपने अपने राज्य के विस्तार को बढ़ाया भी था। उन्हीं के समय में गुजरात के सम्राट ने मलिक खुर्रमखाँ को जालोर का अधिकारी भी मान लिया था।

गज़नी खां के पूर्व व पद का तरक्की का ५०० हाथी व १ ४०० घोड़ों का अधिकारी आपको बनाया था ।

दीवान गजनी खाँ क बाद के तीसरे उत्तराधिकारी दीवान मुजाहिद खां हुए थे जो सन १६४२ ई० में बीजापुर, माही तथा साबरकंथा के सूबेदार बनाने में आए थे और सन १६५१ ई० में पाटन के अधिकारी भी आप हुए थे आपने बीजापुर में एक ईदगाह भी बनाई थी ।

सन १६९७ ई० तक लोहानी घरानेवालों ने पालनपुर, दीसा तथा दांतीवाड़ा सहित जालोर, साचोर तथा भीनमाल पर राज्य किया था । सन १६९७ ई० में सम्राट औरंगजेब के शाही फरमान से जालोर, सांचोर का अधिकार जब्त कर लिया गया । उनके अधिकारी को अन्य स्थान का अधिकार शीघ्र बदले में देने का भी उन्होंने विश्वास दिलाया था । तभी से इस घराने का राजधानी पालनपुर बनाने में आई है । इस प्रकार पालनपुर के राज्य की नींव १६ वीं शताब्दी में पड़ी है

सन १७ ६ ई० कंथाजी कदम तथा मल्हारराव होलकर ने दीवान पहाड़ खां द्वितीय से जो उस समय पालनपुर के अधिकारी थे, खिराज भी वसूल किया था । आप के बाद सन ७२४ ई० में आपके चाचा दीवान बहादुर खां इस/राज्य के उत्तराधिकारी बने थे । दीवान बहादुरखां ने दांता के राणा करणसिंह को खुदसना के अमरसिंह से इसको वापस लेने में सहायता की थी,

जिसके फल स्वरूप दांता की मालगुजारी का सात आना हिस्सा आपने प्राप्त किया था। इस समय उनके अधिकार में थरद का इलाका भी था।

दीवान शेरखां सन १७९२ ई० बिना किसी उत्तराधिकारी पुत्र को छोड़े ही स्वर्गवासी हो गए। इस कारण उत्तराधिकार के लिये यहाँ कुछ लड़ाई-झगड़ा भी हुआ था। सन १७९४ ई० में क्षणिक शमशेरखां उत्तराधिकारी हुए थे। किन्तु बाद में फीरोज़खां, जो न्यायपूर्ण इस राज्य के उत्तराधिकारी थे, राज्य के उत्तराधिकारी हुए। आप १७९५ ई० पालनपुर राज्य की राजगद्दी पर बैठे थे।

सन १८१२ ई० में दीवान फ़ीरोज़खां तृतीय की, जो यहाँ के इस घराने के पच्चीसवें अधिकारी थे, सिंधी जमादारों ने गुप्त रूप से हत्या कर दी और शमशेरखां को राजगद्दी पर बैठाया। दीवान फीरोज़खां के बेटे फतेहखां द्वितीय ने सहायता के लिये गायकवाड़ सरकार तथा बृटिश-सरकार से याचना की। इन दोनों की सम्मिलित सेना ने जाकर पालनपुर पर धावा किया और उसको ले भी लिया। शमशेरखां तथा फतेहखां के सम्बन्ध व अधिकारों पर काफी विचार करने में आया और अन्त में २३ वीं दिसम्बर सन १८१३ ई० को एक इकरारनामा लिखा गया, जिसके अनुसार दीवान फतेहखाँ द्वितीय अपने पुरखों की राजगद्दी पालनपुर के उत्तराधिकारी बनाए गए। इस इकरारनामा की स्वीकृति १८ वीं फरवरी सन १८१४ ई० को गवर्नर जनरल इन काउंसिल में की गई थी।

पालनपुर स्टेट तथा बृटिश-सरकार के बीच का सम्बन्ध

पहले पहल सन १८०६ ई० में प्रारम्भ हुआ है ऐसा उनके कागज-पत्रों से ज्ञात होता है। सन १८१५ ई० में राज्य की हिफ़ाज़त तथा उचित प्रबन्ध के बारे में सम्बन्ध स्थापित हुआ था। दीवान फतेहखां सन १८५४ ई० में स्वर्गवासी हुए हैं। आपको चार पुत्र थे, जिनमें-से दीवान जोरावरखां बड़े होने के कारण राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए। सन १८५७ ई० के सिपाही-विद्रोह के अवसर पर आपने बृटिश सरकार के प्रति राजभक्ति पूर्ण कार्य भी किया था।

दीवान जोरावरखां सन १८७७ ई० में स्वर्गवासी हुए। आपके बाद आपके एक मात्र पुत्र हिज़ हाईनेस दीवान शेर मुहम्मदखां राज्य के उत्तराधिकारी हुए। आपका जन्म २ री जनवरी सन १८५२ ई० को हुआ है। द्वितीय अफ़गान युद्ध के समय सभी सामग्री से सुसज्जित २०० ऊँट तथा ४०० टट्टुओं को बृटिश-सरकार को आपने प्रदान भी किये थे। आपके समय में प्रजा की भलाई के काफी कार्य राज्य में हुए थे, जिसके लिये आपका राजत्वकाल इतिहास में सदा-सर्वदा सुप्रसिद्ध रहेगा। आपके सुशासन का विचार कर सन १८९३ ई० में के० सी० आई० ई० की उपाधि से भी आपको विभूषित किया गया था। सन १८९८ ई० में आपको जी० सी० आई० ई० भी बना दिया गया। सन १९१० ई० में आपको खान्दानी नवाब की उपाधि भी प्रदान की गई। आपको उसी समय १३ तोपों की व्यक्तिगत सलामी उतारने का भी अधिकार प्रदान किया गया था, जो सन १९०८ ई० में यहाँ के अधिकारियों के लिये स्थायी सलामी कर दी गई। इस

में इम्पीरियल दरबार के अवसर पर भी उसी में भरती किए गए थे। सन १९१२ ई० में स्व० नवाब साहब ने राज्य-प्रबन्ध की शिक्षा देने के लिये राज्य भार आपको सुपुर्द करने की कृपा की थी जिसे आपने ७ वर्ष तक सुचारुरूप से सँभाला था। सन १९१४-१८ ई० के महायुद्ध के समय में राज्य के सभी साधनों को बृटिश-सरकार को सुपुर्द करने में भी आप थे। श्रीमान हिज़ हाईनेस मेजर जनरल मैकवीन जो २१ वीं इफेंटरी ब्रिगेड, बरेली के कमांडिंग आफिसर थे, उनके अधीन के स्टॉफ में सम्मिलित भी आप किए गए थे किन्तु मेडिकल बोर्ड ने फ्रांट पर उपस्थित रहकर प्रत्यक्ष सैनिक सेवा करने के अयोग्य आपको बता दिया था नवम्बर सन १९१६ ई० में श्रीमान हिज़ हाईनेस को आनरेरी कमीशन आफ़ केप्टन का पद प्रदान किया गया था। सन १९२० ई० में आप के० सी० आई० ई० भी बनाए गए थे सन १९२०-२१ ई० में नरेंद्र-मण्डल की प्रथम स्टैंडिंग कमेटी के १ सदस्य भी मनोनीत किए गए थे जब हिज़ रायल हाईनेस दी प्रिन्स आफ़ वेल्स भारत में पधारे थे तब आप उनके ए० डी० सी० भी रहे थे। सन १९२२ ई० में हिज़ रायल हाईनेस के हाथों से श्रीमान को के० सी० वी० ओ० का सम्मान भी प्राप्त हुआ था। सन १९३२ ई० में श्रीमान जी० सी० आई० ई० भी बनाए गए। सन १९३६ ई० में श्रीमान लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर उन्नत किए गए। फरवरी सन १९३७ ई० में हिज इम्पीरियल मैजेस्टी दी किंग इम्परर ने आप आनरेरी ए० डी० सी० भी घोषित किए गए।

में इम्पीरियल दरबार के अवसर पर भी उसी में भरती किए गए थे। सन १९१२ ई० में स्व० नवाब साहब ने राज्य-प्रबन्ध की शिक्षा देने के लिये राज्य भार आपको सुपुर्द करने की कृपा की थी जिसे आपने ७ वर्ष तक सुचारुरूप से सँभाला था। सन १९१४-१८ ई० के महायुद्ध के समय में राज्य के सभी साधनों को बृटिश-सरकार को सुपुर्द कर ने में भी आप थे। श्रीमान हिज हाईनेस मेजर जनरल मैकबीन जो २१ वीं इफेंटरी ब्रिगेड, बरेली के कमांडिंग आफिसर थे, उनके अधीन के स्टॉफ में सम्मिलित भी आप किए गए थे किन्तु मेडिकल बोर्ड ने फ्रांट पर उपस्थित रहकर प्रत्यक्ष सैनिक सेवा करने के अयोग्य आपको बता दिया था नवम्बर सन १९१६ ई० में श्रीमान हिज़ हाईनेस को आनरेरी कमीशन आफ़ कैप्टन का पद प्रदान किया गया था। सन १९२० ई० में आप के० सी० आई० ई० भी बनाए गए थे सन १९२०-२१ ई० में नरेंद्र-मण्डल की प्रथम स्टैंडिंग कमेटी के १ सदस्य भी मनोनीत किए गए थे जब हिज़ रायल हाईनेस दी प्रिन्स आफ़ वेल्स भारत में पधारे थे तब आप उनके ए० डी० सी० भी रहे थे। सन १९२२ ई० में हिज़ रायल हाईनेस के हाथों से श्रीमान को के० सी० वी० ओ० का सम्मान भी प्राप्त हुआ था। सन १९३२ ई० में श्रीमान जी० सी० आई० ई० भी बनाए गए। सन १९३६ ई० में श्रीमान लेफ्टीनेंट कर्नल के पद पर उन्नत किए गए। फरवरी सन १९३७ ई० में हिज़ इम्पीरियल मैजेस्टी दी किंग इम्परर के आप आनरेरी ए० डी० सी० भी घोषित किए गए।

मुसलमानी नाम जहानआरा का धारण करने पर विवाह भी किया था। १२ वीं सितम्बर सन १९३९ ई० को इनके साथ निकाह-संस्कार हुआ था।

सुप्रसिद्ध व्यक्ति विशेष

[क] राजघरानेवाले

(१) साहिबज़ादा मुहम्मदखां—आप हिज हाईनेस हुसामुल-मुल्क साहिबजादा जबरदस्तखां के भतीजे हैं जो हिज हाईनेस के चचेरे भाई होते हैं

(२) साहिबजादा मुहम्मद उसमानखां—साहिबजादा जबरदस्तखां के बेटे हैं।

[ख] नोबुल्स तथा सरदार गण

[धार्मिक मण्डली]

(१) पीर साहब अलामियां

(२) बाबा साहब माहिर हुसैन

(३) उमदतुस-सुल्हा महन्त श्री उत्तमपुरी राजपुरवाले

[सरदार मण्डल]

(१) अमीर अख्तर हुसैनखां

(२) कैप्टन मियां अहमदखॉं

(३) बाबी श्री कमालुद्दीनखॉं नानौसानावाले

(४) मियां फीरोजखॉं

(५) ठाकुर उमर दराज़खाँ गिदामनवाले

(६) ठाकुर आजमखाँ नगानावाले

[ग] पदाधिकारी गण

(१) वज़ीर तथा प्रधानमंत्री—जे० आर० धुरन्धर, ओ० बी० ई० बी० ए० एल-एल० बी०, जे० पी०।

(२) ज्यूडीशियल एडवाइज़र—दीवान बहादुर कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम० ए०, एल-एल० बी० जे० पी०।

(३) कस्टम तथा एज्यूकेशन मिनिस्टर—राव बहादुर श्री दामोदरदास व्रजलाल पटवारी बी० ए०, एल-एल० बी०।

(४) रेवेन्यू मिनिस्टर—वलयामियाँ बाई० सैयद, बी० ए०, एल-एल० बी०।

(५) प्राइवेट सेक्रेटरी टू एच० एच०—अप्पा साहब टाके।

जैसलमेर स्टेट

शासक—हिज हाईनेस महाराजाधिराज महारावल सर श्री जवाहरसिंह जी साहब बहादुर के० सी० एस० आई० महारावल आफ जैसलमेर।

जन्म—१८ नवम्बर सन १८८२ राजगद्दी—२. जून सन १९१४

क्षेत्रफल—१६०६२ वर्गमील आबादी - ७६२५५

आमदनी—३,२६,१४५ रुपया खर्च— ३ ६८ ००० रुपया

सलामी—१५ तोप।

रास्ता—सबसे पास का रेल्वे स्टेशन मारवाड राज का बारमर स्टेशन है, जो जैसलमेर से १०४ मील की दूरी पर है

संक्षिप्त इतिहास

इस राज्य के शासक—यादव भाटी राजपूत वंशी हैं तथा ये अपने को पूर्व के यादवों से सम्बन्धित भी बतलाते हैं, जिनका प्रभुत्व भारत में लगभग २००० वर्ष पूर्व में काफी रहा है। यद्यपि महाराज ययाति ने

था। अस्तु, इस भी बार ॥ हा, चारणों आ ग्रन्थावली पढ़ने न यह बात स्पष्ट विदित हो जाती है कि किसी दैवी दुघटना मे हा यादवों का न भारतवर्ष मे आना पड़ा था।

भारतभूमि म न आकर यादवगण पञ्जाब मे रहने लगे और यहाँ उन्होंने शालिवाहनपुर नामक एक नगर भी स्थापित किया परन्तु इस नये बसाये हुए नगर मे वे बहुत दिन नहीं रह सके, बहुत शीघ्र ही शत्रुओं के द्वारा वहाँ से हटाये जाकर राज-स्थान मे आकर रहने को वे बाध्य हुए। लङ्गह, जोहिया और महिल प्रभृति जातियाँ उस समय वहां वास करती थी। यादवों ने उनको वहा से हटाकर अपना अधिकार जमाया और धीरे धीरे अपने आधिपत्य का विस्तार किया। समय पाकर उन्होंने अनेक नगर स्थापित किये। उन नगरों मे तेनोत दरवाल और जैसलमेर * अधिक प्रसिद्ध है।

जिस समय यादव लोग जबूलिस्तान से हट न भारत मे आये उस समय वे छोटे छोटे कई गोत्रों मे विभक्त थे, जिनमे भट्टी विशेष पराक्रमी थे। समय पाकर भट्टी गोत्रवालों ने यादवों के अन्य गोत्रवालों की अपेक्षा अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की।

यदुकुल की एक दूसरी प्रसिद्ध शाखा का नाम जारिजा है, भट्टी के बाद उक्त कुल के ऐतिहासिक ग्रन्थों मे इसी ने स्थान पाया है। इन दोनों शाखाओं के विषय मे एक ही प्रकार का वर्णन मिलता है दोनों

* सम्वत १२१२ (सन ११५६ ई०) मे जैसलमेर स्थापित हुआ था। इस नगर के स्थापित करने से पहले किसी प्राचीन जाति से लोद्रवा पाटण नामक नगर लेकर वे कुछ दिन वही रहे थे।

शाखाओं में विभक्त हैं, जिनमें भट्टी और जारिजा विशेष प्रतिष्ठित हैं।

जैसा ऊपर बताया गया है कि यादववंश सुप्रसिद्ध पौराणिक नरेश यदु से अपना प्रारम्भ बतलाते हैं। यह चन्द्रवंशी क्षत्रियों की सन्तानों में से हैं। कुछ लोग इनको भगवान बुद्ध के भी वंशज बतलाते हैं। लोगों का कहना यह भी है कि यादव नरेशों की प्रारम्भिक राजधानी प्रयाग में थी, जिसे इस समय इलाहाबाद भी कहते हैं। उसके बाद में मथुरा भी इन्हीं की राजधानी बतलाई जाती है। सुप्रसिद्ध वीर भगवान कृष्ण के स्वर्गारोहण के समय से इस शाखावाले छिन्न-भिन्न हो गए ऐसा ज्ञात होता है।

जैसलमेर के इतिहास के अनुसार भगवान कृष्ण के दो पुत्रों के साथ इनमें के बहुत से लोग भारत को छोड़कर सिंधुनद के पार जाकर बस गए थे। उनके वंशजों में-से एक का नाम गज था, जिन्होंने गजनी का किला भी बनवाया था। इस गज़नी के बारे में कर्नल टॉड साहब का मत है कि यह अफगानिस्तान का गज़नी है। किन्तु कनिंघम साहब इस मत को नहीं मानते। उनके मतानुसार गज का बनवाया हुआ किला पंजाब के रावलपिंडी नामक जिले में कहीं आस-पास में रहा है। कर्नल टॉड साहब के मत के अनुसार खुरासान के नरेश ने उन सबको एक लड़ाई में हरा कर उनको काफी संख्या में कत्ल भी करवाया था, जिससे उनके साथी गण दक्षिण की ओर पुनः पंजाब में भाग आए, जहाँ पर शालिवाहन ने एक

है। देवराज यहीं जाकर स्थायी रूप से रहने लगे थोड़े समय के बाद राजधानी लोदरवा नामक स्थान पर बदलने में आई यह एक बड़ा नगर था और इसमें १२ फाटक भी थे जिनको इन लोगों ने लोदरा राजपूतों से छीना था, जिसके खंडहर जैसलमेर नगर के उत्तर पश्चिम की दिशा में १० माल की दूरी पर अब भी देखे जा सकते हैं। लोदरवा अरक्षित नगर होने के कारण जैसल नामक नरेश ने जैसलमेर नामक नगर तथा गढ़ सन ११५६ ई० में बनवाया था आपके बाद कई एक वीर नरेश इस राज्य की राजगद्दी के अधिकारी हुए थे जिनमें-से प्राय सभी कई लड़ाई तथा चढ़ाइयों मे सम्मिलित भी रहे थे। स्वतन्त्रतापूर्वक लूट-पाट करने की उनकी लालसा के कारण दो अवसरों पर बड़ा भयङ्कर परिणाम भी निकला था सन १२९५ ई० में तथा उसके थोड़े समय बाद इन लोगों की इस प्रकार की हरकतों के कारण सम्राट अलाउद्दीन इन भाटियों के प्रति इतने क्रोधित हो गए थे कि उन्होंने इनको दबाने के लिये शाही फौज को भी भेजी थी, जिसने जैसलमेर नगर को जीत कर किले को नष्ट-भ्रष्ट भी कर डाला था। इस कारण कुछ समय तक इस राज्य की बड़ी बुरी हालत रही थी। ईसा की सोलहवीं शताब्दी में भाटी लोगों ने सिंध के अमीरों के साथ राठौरों के विरुद्ध सन्धि कर ली। जैसलमेर के २६ वें नरेश रावल सबलसिंह ही इस राज्य के प्रथम नरेश हुए, जिन्होंने दिल्ली के बादशाहों की मातहती स्वीकार करने की कृपा की थी और जिन्होंने अपने राज्य की जमीन को सम्राट की जागीर के तरह उनसे प्राप्त

आपके समय में सिन्ध प्रान्त के विजय करने पर शाहगढ़, घरसिया तथा घोटारु के किले जो पहले जैसलमेर से छीन लिए गए थे इस राज्य को पुनः लौटा दिए गए। महारावल गजसिंह के उत्तराधिकारी महारावल रणजीतसिंह हुए और इनके बैरीसाल तथा उनके शालिवाहन नामक नरेश उत्तराधिकारी हुए थे। अन्तिम नरेश का स्वर्गवास ११ वीं अप्रैल सन १९१४ ई० को हुआ था।

वर्तमान नरेश का संक्षिप्त परिचय

हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज महारावल सर श्री जवाहिरसिंह बहादुर—आपका जन्म १८ वीं नवम्बर सन १८८२ ई० को हुआ है। श्रीमानजी ठाकुर सरदारसिंह के पुत्र हैं आपको सन १८८९ ई० में एटा के मानसिंह ने दत्तक भी लिया था हिज़ लेट हाईनेस महारावल शालिवाहन बहादुर के स्वर्गवास कर जाने पर २६ वीं जून सन १९१४ ई० को जैसलमेर की राजगद्दी के आप उत्तराधिकारी हुए। हिज हाईनेस के बड़े राजकुमार तथा राज्य के भावी उत्तराधिकारी महाराजकुमार श्री गिरधरसिंह बहादुर हैं, जिनका जन्म महारानी सोढीजी से ३ री नवम्बर सन १९०७ ई० को हुआ है। श्रीमान के दूसरे पुत्र महाराजकुमार हुकुमसिंह महारानी हाडीजी से १४ वीं फरवरी सन १९२७ ई० को पैदा हुए हैं हर हाईनेस महारानी श्री हाडीजी, का विवाह श्रीमान हिज़

+ युवराज साहब को एक पुत्र भवँर रघुनाथसिंह २८ वी नवबर सन १९२९ ई० को पैदा भी हुए है।

(२) महाराजकुमार श्री हुकुमसिंह बहादुर—आप श्रीमान हिज़ हाईनेस के द्वितीय पुत्र हैं, जिनका जन्म १४ फरवरी सन १९२ ई० हुआ है।

(३) भवँर श्री रघुनाथसिंह बहादुर—आप युवराज साहब के पुत्र हैं। आपका जन्म २८ वीं नवम्बर सन १९२९ ई० को हुआ है

[ख] नोबुल्स तथा सरदार आदि

राजघराने के नजदीकी सम्बन्धी राजवी पुकारे या कहे जाते हैं और जो वंश की शाखा या दत्तक के कारण दूर के सम्बन्धी हैं, वे रावलोत पुकारे जाते हैं।

राजवी गण

दूधू

(१) ठकुरान राज श्री खेंगरसिंहजी—आपका जन्म ५ वीं जुलाई सन १९३२ ई० को हुआ है। आप दूधू की बड़ी शाखा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

(२) ठकुरान राज श्री नारायणसिंहजी—आपका जन्म ३ री जून सन १८९८ ई० को हुआ है। आपको कुअँर माधोसिंह नामक एक पुत्र हैं, जिनका जन्म २ री जनवरी सन १९१८ ई० को हुआ है। आप दूधू की छोटी शाखा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

नदना

ठकुरान राज श्री गोवर्धनसिंहजी— आपका जन्म २७ वीं सितम्बर

घोड़ा भी नजर में भेंट करना पड़ता है इस प्रकार के खास-खास
ताजीमी तथा सरदारों के वर्णन नीचे दिए जा रहे हैं।

भीकमपुर

राव अमरसिंह—आपका जन्म सन १८७२ ई० में हुआ है। आप वारसग उपशाखा के भाटी राजपूत हैं। आप राज्य के खास सरदारों में हैं आपकी इस्टेट की वार्षिक आय ५ हजार रुपयों की है आप दोहरी ताज़ीम के अधिकारी हैं। दरबार की ओर से आपको राव की उपाधि भी प्रदान की गई है। आपको कोई पुरुष सन्तान नहीं है

गिरजसर

ठाकुर अमरसिंह-आप ठाकुर जेठमल के पुत्र हैं। आप वारसग उपशाखा के भाटी राजपूत हैं आपका जन्म वीं दिसम्बर सन १८७५ ई० को हुआ है आपकी इस्टेट की वार्षिक आय १७००) की है आप दोहरी ताजीम के अधिकारी हैं आपको दो पुत्र हैं। आप अभी हाल ही में स्वर्गवासी हुए हैं।

बरसालपुर

राव मोतीसिंह—आप राव धानजी के पुत्र हैं। आप खिन्याँ उपशाखा के भाटी राजपूत हैं। आपका जन्म सन १८७६ ई० में हुआ है। आपकी इस्टेट की वार्षिक आय ८ हजार रुपयों की है। आप राज्य के ख़ास ख़ास सरदारों में-से एक हैं। आप दोहरी

गेहू या घड्या

ठाकुर मंगलसिंह—आप ठाकुर अचलसिंह के पुत्र हैं। आपका जन्म सन १८९६ ई० में हुआ है। उदयसिहोत उपशाखा के आप भाटी वंशी राजपूत हैं। आपकी इस्टेट की वार्षिक आय ७०) की है। आप दोहरी ताज़ीम के अधिकारी हैं। आपको दो पुत्र भी हैं।

भादली

ठाकुर मंगलसिंह—आप ठाकुर किशनसिंह के पुत्र हैं। आपका जन्म सन १९११ ई० में हुआ है आप उदयसिहोत उपशाखा के भाटी राजपूत हैं। आपकी इस्टेट की वार्षिक आय ८००) की है। आपको एकहरी ताज़ीम का अधिकार प्राप्त है। आपको को पुरुष सन्तान नहीं है।

देवड़ा

ठाकुर समरतसिंह—आप ठाकुर बलिदानसिंह के पुत्र हैं। आपका जन्म सन १८७७ ई० में हुआ है आप उदयसिहोत उपशाखा के भाटी वंशी राजपूत है आपकी इस्टेट की वार्षिक आय १०००) की है। आप एकहरी ताज़ीम के अधिकारी हैं। आपको देरावरसिंह नामक एक पुत्र है, जिनका जन्म सन १९७४ ई० में हुआ है।

रिधा

ठाकुर नागसिंह—आप ठाकुर कुशलसिंह के पुत्र हैं। आप सन १८८५ ई० में पैदा हुए हैं। आप तेजमालोत उपशाखा के भाटी

वंशी राजपूत हैं आपको प्रयागसिंह नामक एक भ्राता भी हैं जिनका जन्म सन १९१० ई० में हुआ है। भवँरसिंह नामक आपके पुत्र का जन्म सन १९३४ ई० में हुआ है। आपकी इस्टेट की वार्षिक आय ५००) की है। आप दोहरी ताज़ीम अधिकारी हैं।

नवातला

ठाकुर गुमानसिंह—आपका जन्म सन १८९६ ई० में हुआ है। आप तथा आपके भ्राता-मण्डल इस इस्टेट के अधिकारी हैं जिसकी वार्षिक आय १००० की है आप लोग ठाकुर मोहब्बतसिंह की सन्तानें हैं आप पृथ्वीराजोत उपशाखा के भाटी वंशी राजपूत हैं। ठाकुर गुमानसिंह को दोहरी ताज़ीम प्राप्त होती है आपको एक पुत्र भी है।

चेलाक

ठाकुर नाहरसिंह—आप ठाकुर हेमजीसिंह के पुत्र हैं। आपका जन्म सन ९०४ ई० में हुआ है। आप दुर्जावत उपशाखा के भाटी राजपूत हैं। आपकी इस्टेट की वार्षिक आय ५००) की है। आप एकहरी ताज़ीम के अधिकारी हैं। आपको कोई पुरुष सन्तान नहीं है।

वड़ागाँव

ठाकुर भवँरसिंह—आप ठाकुर संगीदान के पुत्र हैं आपका जन्म सन १९१२ ई० में हुआ है। आप विहारीदासोत उपशाखा के भाटी राजपूत हैं आपकी इस्टेट की वार्षिक आय ४००) की है। आप एकहरी ताज़ीम के अधिकारी हैं। आपको एक पुत्र भी है।

दाँता स्टेट

शासक—श्रीमान महाराणा सर श्री भवानीसिंहजी साहब बहादुर के० सी० एस० आई०, महाराणा आफ दाँता।

जन्म—११ सितम्बर सन १८९९ राजगद्दी—२० नवम्बर सन १९१४

क्षेत्रफल—१४७ वर्गमील आबादी—२६१७२

आमदनी—२,०३,६३२ रुपया खर्च—२०२,०८० रुपया

सलामी—९ तोप

संक्षिप्त इतिहास

प्रसिद्ध अग्निकुल में सबसे पहले परमार शाखावालों ने प्रतिष्ठा प्राप्त की है। सोलंकी और चौहानकुल की भांति यद्यपि ये विशेष समृद्धिवान और पराक्रमी नहीं हो सके, तथापि तीनों कुलों का इतिहास पढ़ने से स्पष्ट विदित होता है कि सबसे प्रथम परमारों ने ही राज्य को

दाँता स्टेट

शासक—श्रीमान् महाराणा सर श्री भवानीसिंहजी साहब बहादुर के० सी० एस० आई०, महाराणा आफ दाँता।

जन्म —१६ सितम्बर सन १८९९ राजगद्दी —२० नवम्बर सन १९१४

क्षेत्रफल —१२७ वर्गमील आबादी — २६१७२

आमदनी —२,०३,६३२ रुपया खर्च — २,०२,०८० रुपया

सलामी —९ तोप

संक्षिप्त इतिहास

प्रसिद्ध अग्निकुल में सबसे पहले परमार शाखावालों ने प्रतिष्ठा प्राप्त की है। सोलंकी और चौहानकुल की भाँति यद्यपि ये विशेष समृद्धिवान और पराक्रमी नहीं हो सके, तथापि तीनों कुलों का इतिहास पढ़ने से स्पष्ट विदित होता है कि सबसे प्रथम परमारों ने ही राजा को

अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये। शिलालेख से प्रकट हो कि उस समय परमारों का पूर्व गौरव बहुत घट गया था।

परन्तु परमार कुल में भोज नामक जो बड़ा पराक्रमशाली राजा उत्पन्न हुआ था, उसी की कीर्त्ति, यश और प्रभाव से यह कुल उज्ज्वलित हुआ। हिन्दुस्तान चक्रवर्ती महाराज विक्रमादित्य की भांति इनकी राजसभा भी नवरत्नों से विभूषित रहती थी। इनके राजत्वकाल में संस्कृत भाषा की पूर्ण उन्नति हुई थी। इसी उन्नति के कारण भोज का नाम आज तक समस्त हिन्दू-सन्तान की जिह्वा पर है। जब तक संसार में अमृतोपमा संस्कृत भाषा का पठन-पाठन वर्तमान रहेगा कदाचित तब तक भोज का पवित्र नाम कोई नहीं भूलेगा—तब तक उसका नाम परमपूज्य आर्य नृपतियों की पवित्र नामावली से किसी रीति से पृथक् नहीं होगा।

परमार कुल में तीन भोज का ॐ नाम पाया जाता है। तीनों विशेष विद्यानुरागी और पराक्रमशाली थे परन्तु इस स्थान में किस भोज का नाम निर्दिष्ट हुआ है, इसका निराकरण करना कठिन है।

राम परमार ने सिंहासन पर आरूढ़ होकर राजस्थान के छत्तीस राजकुलों को भूमिवृत्ति दी थी। तुआरों को देहली, सौरों को पाटण, चोहानों को अम्बर, कामध्वजों का कन्नोज, पुरोहरों को राजपूताना, यदुवंशियों को सुराट्, जावलों को दाक्षिणात्य, पारणों को कच्छ, कीहरों को काठियावार और रायपुहारोंको सिन्धु देश देकर उसने सबको अपने अधीन कर लिया था।

ॐ एक शिलालेख से प्रकट होता है कि सम्वत् ११०० (सन १०४४)

दुर्भाग्य से एक दाग भी बाकी नहीं है जिससे उसके प्राचीन प्रताप और गौरव का परिचय मिल सकता हो। भारतभूमि के अनेक स्थानों में इनकी जो कीर्ति स्थापित थी, आज निष्ठुर काल के कठोर हाथों से वह विध्वस्त और चूर्ण-विचूर्णित अवस्था में पड़ी है। यदि उनके प्राचीन गौरव का कुछ भी प्रतिबिम्ब देख पड़ता है तो बस वहीं टूटी फूटी इमारतों के बचे हुए ढेरों में।—इस संसार में काल का माहात्म्य कौन जान सकता है? काल ही सृष्टिकर्ता, काल ही संहारकर्ता है और काल ही सुख दुःख का प्रधान नेता है। आज जो अमित धन का अधिकारी होकर मारे दर्प और अहङ्कार के समग्र संसार को तिनके के समान तुच्छ समझता और अपने अधीनों के प्रति पशुओं सा व्यवहार करता है। सम्भव है कल अथवा दो दिन बाद उसी का मस्तक काल के अखण्डनीय नियम के अनुसार शरीर से अलग होकर श्मशानभूमि में लुढ़कता दिखाई दे और कौए सियार, गिद्ध इत्यादि निकृष्ट जन्तु उसपर चढ़े हुए देख पड़ें! जिस अखण्डनीय काल के महात्म्य से ये सब अवश्य होनेवाले कार्य होते रहते हैं, इसी की अपार महिमा से परमार कुल का सामान्य चिन्ह भी नहीं मिलता है। जो परमार कुल महाराज चन्द्रगुप्त जैसे संसार विदित नृपतियों की प्रदीप्त कीर्ति से उज्ज्वलित हुआ था—एक समय तैमूरी तख्त से उतारे जाकर शाह हुमायूं को जिसके एक सामान्य वंशधर के यहाँ आश्रय लेकर अपने प्राणों की रक्षा करनी पड़ी थी—आज राजपूताने के धार नगर का ‡ वर्तमान नृपति ही उसके उस प्राचीन गौरव और प्रताप का अन्तिम चिन्हरूप रह गया है।

---

‡ इस राजा ने परमार कुल की प्रथम शाखा के सोढा गोत्र में

समय तक राज्य किया अन्त में मुसलमानों के बारम्बार के हमले ने उनको कहीं अन्यत्र हट जाने के लिये मजबूर कर दिया सिंध के तत्कालीन नरेश राजा जसराजजी आरासुर नामक पर्वत पर पधारे। उसके आस-पास के देश को जीत कर वर्तमान दाँता राज्य की नींव सन १०६८ ई० में डालने की इन्हीं ने कृपा की थी जसराज जी के उत्तराधिकारियों ने राज्य की सीमा को इतना विस्तृत तथा ठोस बनाया था कि वर्तमान काल के इस राज्य के आस पास के अधिकांश राज्य उस समय में इस राज्य की सीमा में सम्मिलित हो जाते हैं। इनमें से सुदसना की जागीर महाराणा गजसिंह ने अपने छोटे भाई जसवन्तसिंह को उनकी परवरिश के लिये सन १६८० ई० में जागीर की तरह प्रदान की थी और गढ़वाना का जिला इस राज्य की सेवा करने के उपलक्ष में गढिया कुलों सरदारों को विभिन्न समयों में जागीर की तरह प्रदान करने में आया है खेरालू महाल को, जो इस समय बड़ौदा राज्य में मिला लिया गया है, महाराणा जेठमल साहब ने सन १५५० ई० में गुजरात के सूबेदार के यहाँ बन्धक रखा था। ईडर के राव तथा दाँता के नरेशों के साथ १६ वीं तथा १७ वीं शताब्दी में बराबर लड़ाई चलती रही जिस कारण दाँता का राज्य बिल्कुल ही बरबाद हो गया। इसका नतीजा इतना खराब निकला कि उसके बहुत-से जिले उसके अधिकारियों के हाथों से निकल गए।

सम्राट अकबर के राजत्वकाल में शाहज़ादा सलीम उनसे विद्रोह कर दिल्ली से भागे थे। उन्होंने राजपूताना के कई

आपका जन्म १२ वीं सितम्बर सन १८६६ ई० को हुआ है। आपने अजमेर के मेयो कालेज में शिक्षा प्राप्त की है। आपने पिता महाराणा श्री हमीरसिंह व आप २६ वीं नवम्बर सन १९२५ ई० को उत्तराधिकारी हुए हैं आपका प्रथम विवाह जोधपुर के रेवती ठिकाने के महाराज श्री विजयसिंह की भगिनी के साथ हुआ था और दूसरा विवाह बुन्देलखण्ड के सुहावल के नरेश के भगिनी के साथ सम्पन्न हुआ था। दूसरी महारानी साहिबा से श्रीमान को एक राजकुमारी पैदा हुई है दोनों महारानियाँ सन १९२३ ई० में स्वर्गवासी हो गई हैं। तीसरी बार श्रीमान ने अउवा के ठाकुर नाहरसिंह की भगिनी के साथ विवाह किया है इन महारानी साहिबा से श्रीमान को तीन राजकुमार तथा तीन राजकुमारी पैदा हुई हैं।

राजपूताना में यह परमारवंशी राजपूतों का एक ही राज्य है। इन के अधिकारियों को ९ तोपों की सलामी का अधिकार भी प्राप्त है।

सुप्रसिद्ध व्यक्ति विशेष

(क) राजघराने के सदस्य

१—महाराजकुमार श्री पृथ्वीराजसिंहजी—आपका जन्म २२ वीं जुलाई सन १९२८ ई० को हुआ है। आप राज्य के भावी उत्तराधिकारी हैं।

२—महाराजकुमार श्री मधुसूदनसिंहजी—आपका जन्म ३० वीं मई सन १९३६ ई० को हुआ है।

आपने यहाँ भी डिप्लोमा परीक्षा डिस्टिंक्शन के साथ पास की है। आप राज्य के रेवन्यू कमिश्नर क पद पर हैं। आपको दो पुत्र तथा दो पुत्रियां हैं।

(ख) नोबुल्स तथा सरदार गण

घारेड

ठाकुर परबतसिंह—आप भाटा राजपूत हैं। आप राज्य के खास सरदार हैं। आप ताज़ीम के अधिकारी भी हैं। राज्य में आपके पास १० गाँवों की जागीर है।

हडड

ठाकुर किशोरसिंह—आप राठौर राजपूत हैं। आप ताज़ीम क अधिकारी हैं। राज्य में आपके पास १२ गाँवों की जागीर है।

बमनोज

ठाकुर दौलतसिंह-आप राठौर राजपूत हैं। आपकी इस समय ३० वर्ष की अवस्था है राज्य में आपके पास ४ गाँवों की जागीर है।

भानपुर

ठाकुर शिवसिंह-आप बघेल राजपूत हैं। आप ३ री मई सन १९१० ई० में पैदा हुए हैं। आपके पास १ गाँव की जागीर है।

जोड़ता

ठाकुर कालूसिंह-आप चावडा राजपूत हैं। आपका जन्म

४ थी मई सन १८७४ ई० को हुआ है। राज्य में आपके पास १ गाँव की जागीर है।

बजमाना

ठाकुर शिवसिंह—आप जाति के कोली हैं। आपका जन्म ११ वीं अगस्त सन १८९० ई० को हुआ है। राज में आपके पास एक गाँव की जागीर है।

(ग) खान्दानी पदाधिकारी गण

१—सैनखाड़ा के ठाकुर नाहरसिंह—आप चावड़ा राजपूत हैं। प्रधान के खान्दानी पद के लिये आपको १ गाँव राज की ओर से जागीर पर मिला हुआ है।

२—बंधुआ रामदान—आप चारण हैं। आपका जन्म २० वीं फरवरी सन १८९२ ई० को हुआ है। आपको पोल बारठ के खान्दानी पद के लिये खान्दानी जागीर राज की ओर से मिली हुई है।

(घ) पदाधिकारी-मंडल

व्यक्तिगत

प्राईवेट सेक्रेटरी—राय साहब ए० एस० विश्रामसिंह बी० भट्ट

हाउस कन्ट्रोलर—ठाकुर नाहरसिंह आर० चावड़ा

ए० डी० सी०—ठाकुर चन्दनसिंह, आर० चावड़ा।

प्रबन्ध-विभाग

स्थानापन्न दीवान—महाराज श्री पृथीसिंहजी।

स्थानापन्न नायब दीवान—रामचन्द्र पी० कन्हेरे बी० ए०।

रेवेन्यू कमिश्नर—महाराज श्री नारायणसिंह।

बीकानेर स्टेट

शासक—जनरल हिज हाईनेस महाराजाधिराज राजराजेश्वर शिरोमणि महाराजा डॉक्टर सर श्री गङ्गासिंहजी बहादुर जी० सी० एस० आई० जी० सी० आई० ई० जी० सी० वी० ओ० जी० बी० ई० के० सी० बी० एल०-एल० डी० ए० डी० सी० महाराजा आफ बीकानेर राज्य।

जन्म—१३ अक्टूबर सन १८८० राजगद्दी—३१ अगस्त सन १८८७

क्षेत्रफल—२३३१७ वर्गमील आबादी—१२,९२ ९३८

आमदनी—१,२४ ०८,००० रु० खर्च—९३ ००,००० रुपया

सलामी—१७ स्थाई, निजी १९, लोकल १९ तोप।

संक्षिप्त इतिहास

जोधपुर (मारवाड़) स्टेट के इतिहास के बारे में जैसा हमने ऊपर बताया है कि राठौरवंशी राजपूत अपना प्रारम्भ हमारे सुप्रसिद्ध

मुख्य कारण यह था कि उस समय वहाँ के रहनेवाले वे लोग लुटेरों के झुण्डों से इतने परेशान हो गए थे कि इनको उनसे छुटकारा पाने का कोई भी मार्ग सूझ न पड़ता था। राठौर वीरों का वहाँ पर जब पड़ाव पड़ा था तब भी ऐसी ही एक घटना घटी थी। उन वीरों ने इनका सामना कर उन लुटेरों को भगा भी दिया था इस प्रकार की नेकी का कार्य करने के कारण पाली के ब्राह्मण उनके प्रति पानी पानी हो गए और उन्हें हर प्रकार की सहायता करने का भी इन सबों ने वचन दिया इस प्रकार राठौर वीर द्वारका की ओर आगे न बढ़कर वहीं बस गए। आपके पुत्र अस्थानजी ने ईडर से भीलों को हटाकर उसे भी जीत कर अपने छोटे भाई सोनिग को प्रदान किया था। आपके वंशजों ने चन्द या चौंड के राजत्व-काल तक, जो इस वंश के सीयाजी से ११ वें नरेश थे, राज्य की काफी वृद्धि की थी इन [illegible] ने सन १३८१ [illegible] लगभग [illegible] परमार या परिहारों से मंडोर को भी छीन लिया था और इसे अपनी राजधानी भी बनाई थी। यह नगरी ८० वर्ष तक राठौरों की राजधानी बनी रही थी। इसने आगे की जीत में भी काफी सहायता दी थी।

सन १४२८ ई० में राव रीढ़मल राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए थे। उनके बाद राव जोधाजी राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने सन १४६५ ई० में जोधपुर नामक नगर की नींव डाली थी राव जोधाजी के १४ पुत्र थे, जिनमें से राव बीकाजी बीकानेर राज्य की नींव डालनेवाले हुए हैं।

इस बीकानेर राज्य के देशों को जीतने का कार्य सन १४६५ ई०

तथा राजा की उपाधि भी प्रदान की थी। इसमें न केवल वर्तमान बीकानेर का राज्य ही सम्मिलित था, बल्कि कुछ भाग जोधपुर राज्य का भी उसी में सम्मिलित था और पंजाब का भी कुछ भाग उसी में सम्मिलित भी रहा। इसके साथ ही गुजरात प्रांत में भी आपके पास एक जागीर थी। राजा रायसिंह ने सन १५७१ ई० से १६१२ ई० तक राज्य किया था। आपके बाद आपके पुत्र राजा दलपतसिंह राज्य के उत्तराधिकारी हुए। आपने कुल १ वर्ष सन १६१२-१३ ई० तक राज्य किया था।

आपके बाद आपके भाई राजा सूरसिंह बीकानेर की राजगद्दी के उत्तराधिकारी बने थे। आपने सन १६१३-२१ ई० तक राज्य किया था। आपके बाद आपके पुत्र राजा करणसिंह राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए थे। आपने सन १६३१ ६९ ई० तक राज्य किया है आप मुगल-सेना के एक सुप्रसिद्ध सेना नायकों में से थे, आपने मुगल साम्राज्य की ओर से दक्षिण में काफी समय तक सेवा भी की थी आपका वहीं पर स्वर्गवास भी हुआ था। आपको मुगलों की ओर से दक्षिण में एक जागीर भी मिली थी, जो वर्तमान समय में निज़ाम के राज्य में स्थित है। यह जागीर बीकानेर दरबार के पास १२ वीं फरवरी सन १९ ४ ई० तक बराबर रही है। १२ वीं फरवरी सन १९० ई० को यह बृटिश सरकार को औरंगाबाद छावनी को वृद्ध करने के लिये दे दी गई और इसके बदले में बृटिश-सरकार की ओर पंजाब प्रांतांतर्गत बायलवास तथा रत्तखेड़ा नामक दो गाँव तथा २'

आपके बाद आपके पुत्र महाराजा श्री राजसिंह राजगद्दी के उत्तराधिकारी बने थे इसी साल आप स्वर्गवासी हो गए, जिस कारण आपके पुत्र महाराजा श्री प्रतापसिंह राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए। आप भी उसी साल ही स्वर्गवासी हुए। आपके बाद महाराजा श्री सूरतसिंह राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए। आपने सन १८८८ से १८२८ ई० तक राज्य किया है। आपके ही राजत्वकाल में बृटिश-सरकार के साथ इस राज्य का समझौता हुआ है। सर्वप्रथम सन १८०८ ई० बृटिश-सरकार के साथ इस राज्य का सम्बन्ध स्थापित हुआ था, जब कि मि० एलफिन्स्टन अफगानिस्तान के राजदूत बीकानेर राज्य से होकर गुजरे थे सन १८१८ ई० को राज्य में बाहरवालों ने विद्रोह भी खड़ा कर दिया था। जिसे बीकानेर-दरबार ने बृटिश-सरकार की सहायता से तुरन्त दबा दिया था। इसी समय एक सन्धिपत्र भी लिखा गया, जिसपर बृटिश-सरकार की ओर से मारक्विस हेस्टिंग ने सन १८१८ ई० में दस्तखत किये थे। इसमें बीकानेर राज्य की स्थिरता की बृटिश-सरकार ने जिम्मेदारी लेने की कृपा की थी। बीकानेर दरबार ने इसमें बृटिश-सरकार के मातहत में रहकर सहयोग देने की प्रतिज्ञा की थी साथ ही उन्होंने अन्य किसी नरेश के साथ सम्बन्ध न रखने की भी प्रतिज्ञा की थी। इस समय के बाद कुछ भीतरी झगड़े अवश्य ही राज्य में उठ खड़े हुए थे, किन्तु बाहरी झगड़ों से इस राज्य को अवश्य ही राहत मिल गई। सन १८५७ ई० के सिपाही विद्रोह के अवसर पर इस राज्य की ओर से प्रभुशक्ति

डूंगरसिंह के सौतेले छोटे भाई तथा दत्तक पुत्र हैं। स्वर्गीय तथा वर्तमान दोनों हिज़ हाईनेस महाराजा बहादुरों के सगे पिता महाराज श्री लालसिंह थे, जो महाराज गजसिंह के वंशजों में से हैं, जिन्होंने बीकानेर में सन १७४५-८७ तक राज्य किया था। हिज़ हाईनेस महाराजा श्रीगंगासिंह बहादुर ३१ वीं अगस्त सन १८८७ ई० को बीकानेर की राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए हैं श्रीमान का प्रथम विवाह हिज़ लेट हाईनेस प्रतापगढ़ के महारावत की राजकुमारी के साथ हुआ था। किन्तु उन महारानी साहिबा का १९ वीं अगस्त सन १९०६ ई० को स्वर्गवास हो गया। आपसे श्रीमान को एक पुत्र महाराजकुमार श्री सादुलसिंहजी ७ वीं सितम्बर सन १९०२ ई० को पैदा हुए हैं, जो बीकानेर राज्य के वर्तमान भावी उत्तराधिकारी हैं। इन्हीं श्रीमती महारानी साहिबा से एक राजकुमार तथा एक राजकुमारी और भी पैदा हुई थीं, किन्तु ईश्वर ने दोनों को असमय में ही अपने पास बुला लिया। राजकुमार तो बचपन ही में स्वर्गवासी हो गए और राजकुमारी साहिबा सन १९१५ ई० में स्वर्गवासी हुईं। श्रीमान हिज़हाईनेस ने दूसरा विवाह मारवाड़ के भावड़ के ठाकुर साहब के भ्राता तथा बीकानेर के रावन्तसर के स्वर्गीय ठाकुर सुल्तानसिंह की कन्या के साथ भी किया था, जिनका भी स्वर्गवास सन १९२२ ई० में हो गया। प्रथम महारानी साहिबा के स्वर्गवासी हो जाने के बाद ही श्रीमान ने मारवाड़ के बीकमपुर

में सबसे छोटी उमर के मेजर थे। २५ वी जून सन १८०८ ई० में आप लेफ्टीनेंट कर्नल के ऊंचे पद पर उन्नत किए गए थे आपने चीन की लड़ाई में प्रत्यक्ष उपस्थित रहकर सैनिक सेवाएं भी की थीं। वहाँ अगस्त सन १९०० ई० में अपनी गंगा रिसाला के नायकत्व में आप पधारे थे और लड़ाई के समाप्त होने पर दिसम्बर सन १९०० ई० में वहां से वापस भी लौटे थे। आपकी इस प्रकार की सेवाओं का विचार कर Knight Commander of the Indian Empire बनाए गए हिज़ मोस्ट ग्रेशस मैजेस्टी किंग इम्परर एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण दरबार में सम्मिलित होने के लिये जब आप इङ्गलैंड में पधारे थे तब आप प्रिंस आफ वेल्स के Aide de Camp भी बनाए गए थे जून सन १९०४ ई० में हिज़ मोस्ट ग्रेशस मैजेस्टी दी किंग-एम्परर के जन्मगांठ के अवसर पर आप K C S I के सम्मान से विभूषित किए गए थे और सन १९०७ ई० के नए वर्ष के प्रथम दिन को आपको G C I E का भी सम्मान प्राप्त हुआ था। २२ जून सन १९११ ई० को हिज़ मैजेस्टी किंग इम्परर जार्ज पंचम की राजगद्दीनशीनी के अवसर पर श्रीमान हिज़ हाईनेस को कर्नल के पद पर उन्नत किया गया था और मई सन १९११ ई० में हिज़ मैजेस्टी सम्राट जार्ज पंचम के आप ए० डी० सी० भी बनाए गए थे। हिज़ हाईनेस इङ्गलैंड में हिज़ मैजेस्टी सम्राट जार्ज पंचम के राज्यारोहण में सम्मिलित होने के लिये भी निमंत्रित किए गए थे, तभी वहां पर कैंब्रिज विश्वविद्यालय की ओर

में सबसे छोटी उमर के मेजर थे। २५ वी जून सन १९०६ ई० में आप लेफ्टीनेंट कर्नल के ऊंचे पद पर उन्नत किए गए थे आपने चीन की लड़ाई में प्रत्यक्ष उपस्थित रहकर सैनिक सेवाएं भी की थीं। वहाँ अगस्त सन १९०० ई० में अपनी गंगा रिसाला के नायकत्व में आप पधारे थे और लड़ाई के समाप्त होने पर दिसम्बर सन १९०० ई० में वहां से वापस भी लौटे थे। आपकी इस प्रकार की सेवाओं का विचार कर Knight Commander of the Indian Empire बनाए गए हिज़ मोस्ट ग्रेशस मैजेस्टी किंग इम्परर एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण दरबार में सम्मिलित होने के लिये जब आप इङ्गलैंड में पधारे थे तब आप प्रिंस आफ़ वेल्स के Aide de Camp भी बनाए गए थे जून सन १९०४ ई० में हिज़ मोस्ट ग्रेशस मैजेस्टी दी किंग-एम्परर के जन्मगांठ के अवसर पर आप K C S I के सम्मान से विभूषित किए गए थे और सन १९०७ ई० के नए वर्ष के प्रथम दिन को आपको G C I E का भी सम्मान प्राप्त हुआ था। ३ री जून सन १९१० ई० को हिज़ मैजेस्टी किंग इम्परर जार्ज पंचम की राजगद्दीनशीनी के अवसर पर श्रीमान हिज़ हाईनेस को कर्नल के पद पर उन्नत किया गया था और मई सन १९११ ई० में हिज़ मैजेस्टी सम्राट जार्ज पंचम के आप ए० डी० सी० भी बनाए गए थे। हिज़ हाईनेस इङ्गलैंड में हिज़ मैजेस्टी सम्राट जार्ज पंचम के राज्यारोहण में सम्मिलित होने के लिये भी निमन्त्रित किए गए थे, तभी वहां पर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की ओर से

भी प्राप्त किया था। यहाँ नहीं आपको जनरल सरविस मेडल, दी विक्टोरिया मेडल तथा ग्रैंड कार्डन आफ़ दी आर्डर आफ़ दी नाइल भी प्राप्त हुआ था। श्रीमान हिज़ हाइनेस ने इस प्रकार बृटिश-क्राउन के लिये तीन-तीन महाद्वीपों में अर्थात् एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप की लड़ाई में सम्मिलित रहकर प्रतिभा तथा प्रसन्नतापूर्ण ढंग से सेवाएं की हैं। श्रीमती महाराजकुमारी की असाध्य बीमारी के कारण श्रीमान हिज़ हाइनेस को लाचार होकर २१ वीं फरवरी सन १८७५ ई० को बीकानेर वापस लौटना पड़ा था और ३१ वीं जुलाई सन १८१५ ई० को श्रीमान की वह महाराजकुमारी सदा सर्वदा के इस असार संसार से अपने पति तथा आपके राज-परिवार को शोक सागर में छोड़कर विदा हो गई। भारत सरकार की ओर से भारतीय नरेशों के प्रतिनिधि नामज़द किए जाने पर इम्पीरियल वार कान्फरेंस तथा वार कैबीनेट में सम्मिलित होने के लिये फरवरी सन १९१७ ई० को श्रीमान हिज़ हाइनेस इंगलैंड के लिये पुनः रवाना हुए। इस बार लंडन, एडिनबरा, मैनचेस्टर तथा बृस्टल आदि सुप्रसिद्ध नगरों को घूमने तथा देखने के लिये श्रीमान हिज़ हाईनेस को अच्छा अवसर भी प्राप्त हो गया। एडिनबरा-यूनीवर्सिटी की ओर से आपको इस बार ऑनरेरी LL D की डिग्री भी प्रदान की गई थी। सन १९१७ ई० को आप मेज़र जनरल के सम्मानपूर्ण पद पर उन्नत किए गए और १ ली जनवरी सन १९१८ ई० को ग्रैंड कमांडर आफ़ दी विक्टोरियन आरडर भी बनाए गए

उनकी ओर से अच्छा भाग भी लिया था। सन १९३५ ई० में स्वर्गीय हिज इम्पीरियल मैजेस्टी जार्ज पंचम की सिलवर जुबली में सम्मिलित होने के लिये हिज़ मैजेस्टी की सरकार ने श्रीमान हिज़ हाईनेस को लण्डन में निमन्त्रित भी किया था सन १९३७ ई० में भी हिज इम्पीरियल मैजेस्टीज़ किंग इम्परर जार्ज षष्ठम तथा क्वीन एलाज़बेथ के कारोनेशन में सम्मिलित होने के लिये भी लण्डन में बृटिश सरकार द्वारा श्रीमान हिज़ हाईनेस पुनः निमन्त्रित किए गए थे।

सितम्बर सन १९३० ई० में आपको लेफ्टीनेंट जनरल के सम्मानित पद पर मनोनीत किया गया था और सन १९३७ ई० में आप जनरल बनाए गए थे। सितम्बर सन १९३६ ई० को श्रीमान हिज हाईनेस हिज़ मैजेस्टी सम्राट एडवर्ड अष्टम के एवज़ा आनरेरी ए० डी० सी० मनोनीत किए गए। फरवरी सन १९३७ ई० में आप हिज़ मैजेस्टी सम्राट जार्ज षष्ठम के भी अतिरिक्त अवैतनिक अंगरक्षक मनोनीत हुए। जनवरी सन १९२९ ई० में उसमानियाँ यूनीवर्सिटी से आपको आनरेरी एल० एल० डी० की डिग्री प्रदान की गई थी। श्रीमान हिज़ हाईनेस बनारस के भारतवर्ष महामण्डल के संरक्षक भी हैं। इण्डियन लीग आफ़ नेशन्स यूनायन के आप अध्यक्ष भी हैं। साथ ही लंडन की ईस्ट इण्डियन एसोसिएशन के आप उपाध्यक्ष भी हैं।

जी साहिबा को सन १९१८ ई० की १ ली जनवरी को आर्डर आफ़ दी क्राउन आफ इण्डिया प्राप्त हुआ है

श्रीमान हिज हाईनेस को अपनगा १९ तोपों की सलामी उतारने का अधिकार प्राप्त है ।

विवाहित सम्बन्ध

बीकानेर-राजघराने का वैवाहिक सम्बन्ध गत साढ़े चार शताब्दियों से कई भारतीय राजघरानों के साथ रहा है। उनमें से खास-खास उल्लेखनीय ये हैं -

उदयपुर, जयपुर, बूँदी, कोटा, जैसलमेर, करौली, रीवाँ, कच्छ, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ के राजघराने।

बीकानेर तथा मेवाड़ के राजघरानों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध बहुत ही कम हुए हैं प्रथम वैवाहिक सम्बन्ध का होना इतिहास में राव बीकाजी के छोटे पुत्र राव लूणकरण का राणा रायमल की पुत्री के साथ होना बताया जाता है। उसके बाद सन १८४० ई० में उदयपुर के महाराणा सरदारसिंह का विवाह महाराजा रतनसिंह की पुत्री के साथ हुआ था और हाल में उदयपुर (मेवाड़) के भावी राज्य के उत्तराधिकारी महाराजकुमार श्री भागवतसिंह का विवाह बीकानेर के वर्तमान नरेश हिज हाईनेस की पौत्री के साथ २६ वीं फरवरी सन १९४० ई० को सम्पन्न हुआ है। सन १८३७ ई० में महाराजा सरदारसिंह का विवाह प्रतापगढ़ राज्य के महा

सुप्रसिद्ध व्यक्ति विशेष

[क] राजघराने के सदस्य

श्रीमान हिज़ हाईनेस के पास के पितृकुल के सम्बन्धी महाराजा गजसिंह के पौत्र महाराजा दलेलसिंह के वंशज है —

(१) कर्नल महाराजकुमार श्री सादुलसिंहजी बहादुर सी० वी० ओ०—आप बीकानेर राज्य के भावी उत्तराधिकारी हैं। आपका जन्म ७ वीं सितम्बर सन १९०२ ई० में हुआ है। १७ वी मार्च सन १९२२ ई० को जब भारत में हिज़ रायल हाईनेस दी प्रिंस आफ़ वेल्स पधारे थे आपको कंपेनियन आफ़ रॉयल विक्टोरियन आर्डर भी प्राप्त हुआ था श्रीमान का विवाह रीवाँ स्टेट के वर्तमान श्रीमान हिज़ हाईनेस की भगिनी के साथ सम्पन्न हुआ है, जिनसे श्रीमान का ज्येष्ठ कुँवर भवॅर श्री करणीसिंह बहादुर २१ वीं एप्रिल सन १९२४ ई० को पैदा हुए है। दूसरे भवॅर श्री अमरसिंह बहादुर का जन्म ११ वीं दिसम्बर सन १९२५ ई० को हुआ है। इन कुमारों के अतिरिक्त एक राजकुमारी भी श्रीमान को एप्रिल सन १९२१ ई० को पैदा हुई है, जिनका विवाह २९ वीं फरवरी सन १९४० ई० को उदयपुर (मेवाड़) राज्य के भावी उत्तराधिकारी महाराजकुमार श्री भागवतसिंह के साथ सम्पन्न हुआ है।

(२) लेफ्टीनेंट भवॅर श्री अमरसिंहजी बहादुर—आप महाराजकुमार श्री सादुलसिंहजी के द्वितीय पुत्र हैं। आपका जन्म,

के० सी० एस० आई० १ ली जनवरी सन १९१६ ई० को बनाए गए हैं। आपको इस समय कुंअर अजीतसिंह नामक एक जीवित पुत्र हैं जो बीकानेर के डूंगर कालेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं आपके दूसरे पुत्र कुंअर श्री अभयसिंह नामक भी थे, जिनका लड़कपन में स्वर्गवास हो गया है

(४) महाराज श्री तेजसिंहजी साहब—अपने पिता स्व० महाराज जगमालसिंहजी साहब के १६ वीं अक्टूबर सन १९३० ई० को स्वर्गवासी हो जाने पर उनकी इस्टेट के आप उत्तराधिकारी हुए हैं। आपका जन्म ६ ठी एप्रिल सन १९१९ ई० को हुआ है। आपको दो छोटे भाई भी हैं, जिनके नाम महाराज श्रीगोविंदसिंह तथा महाराज श्रीचन्द्रसिंहजी साहब हैं।

(५) मेजर महाराज श्री नारायणसिंहजी साहब—आपका जन्म २४ वीं डिसम्बर सन १८९४ ई० को हुआ है। आपने अजमेर के मेयोकालेज में शिक्षा प्राप्त की है। इसके बाद सन १९१५ ई० में आप बीकानेर के वर्तमान श्रीमान हिज़ हाईनेस के प्राइवेट सेक्रेटरी बनाए गए। आपने बीकानेर राज्य की सेवा कई पदों पर रहकर करने की कृपा की है। सन १९१७ ई० में इम्पीरियल वार काउंसिल तथा कैबिनेट की प्रथम बैठक में सम्मिलित होने को जाते समय हिज हाईनेस महाराजा बहादुर बीकानेर का आपने साथ दिया था। सन १९२४ ई० में श्रीमान हिज हाईनेस महाराजा बहादुर बीकानेर जब एसेम्बली आफ़ दी लीग आफ़ नेशन्स की मीटिंग

सन १८९७ ई० में हुआ है। आपने अजमेर के मेयोकालेज में शिक्षा प्राप्त की है, जहाँ से आपने वहाँ की डिप्लोमा की परीक्षा भी पास की थी। पश्चात् में बीकानेर-सरकार के होम डिपार्टमेंट में सेक्रेटरी के पद पर आपने कार्य भी किया है आपने इन्दौर के ट्रेनिंग स्कूल फार इण्डियन कैडेट्स में सैनिक शिक्षा भी ग्रहण की थी। वहाँ से सैनिक शिक्षा ग्रहण कर लेने के बाद ही दिसम्बर सन १९१९ ई० में हिज मैजेस्टी कमीशन से भेंट करने पर आप १३वीं राजपूत सेना में द्वितीय (सेकेंड) लेफ्टीनेंट की तरह सम्मिलित कर लिए गए थे जिसके साथ आपने मैसोपोटामियाँ में फरवरी सन १९२० ई० से फरवरी सन १९२१ ई० तक सेवा भी की थी उसके बाद १०९ वीं इन्फेंटरी सेना में सम्मिलित किए गए जहाँ पर रहकर आपने वज़ीरिस्तान में एप्रिल सन १९२१ ई० से जुलाई सन १९२१ ई० तक सेवाए की थीं।

नोट—इनके बाद श्रीमान के पास के सम्बन्धियों में अन्य शाखाओं के महाराजा गजसिंह के वंशज आते हैं, जिनकी संख्या काफ़ी है।

विवाहित राजकुमारी आदि

महाराजकुमारी—कोटा के वर्तमान नरेश हिज हाईनेस महाराव भीमसिंहजी बहादुर के साथ आपका विवाह सन १९३० ई० में बड़ी धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ है, जिनसे श्रीमतीजी को २१ वीं फरवरी सन १९३४ ई० को राजकुमार ब्रजराजसिंह नामक एक पुत्ररत्न

राठौर नरेशों के आने के पूर्व में इस राज्य के पश्चिम या उत्तर की ओर भाटी वंशी राजपूतों का आधिपत्य था, जिन्होंने पूर्वकाल में बसे हुए परमार या पवाँरों को भगाकर उसपर अपना कब्जा स्थापित किया था। इस समय में भी इस राज्य में कुछ परमार या पवाँर वंशी राजपूतों के घराने हैं। किन्तु उनका प्रारम्भ बाद का है और उनका कोई महत्व भी इस समय में नहीं है।

प्राचीन के प्राय सभी घरानों का नाश हो गया है राव बीकाजी ने जो जो महत्वपूर्ण कार्य किए थे उनमें-से एक भाटीवंशी राजपूतों को उस प्रदेश की राजनीति से उदासीन बना देने का भी था। इसी के लिये खास तौर से आपने उनके सुप्रसिद्ध सरदार पुगल के राव शेखाजी की पुत्री के साथ विवाह किया था। भाटी घराने के पास इस प्रदेश में जो भी अधिकार था, वह सभी यहाँ तक कि भटनेर का मजबूत किला भी उनके हाथों से निकल गया। कुल ५९ गाँव पर इस समय इनका अधिकार है, जिनमे-से ४६ गाँव केवल पुगल के राव साहब के आधीन मे है। भाटी घराने के अन्य सुप्रसिद्ध सरदारों मे बीथनोक के ठाकुर साहब, जयमलसर के रावत तथा खरबाड़ा और सत्तासर के ठाकुर गण ही केवल उल्लेख योग्य हैं। किन्तु उनमे-से कोई भी अधिक प्रभावशाली नहीं हैं सत्तासर के स्वर्गीय ठाकुर साहब की पुत्री का विवाह हिज़ लेट हाईनेस महाराजा डूंगरसिंह के साथ हुआ था जो अभी तक जीवित भी हैं और हाजर महारानी, कहलाती हैं, वर्तमान समय में द्वितीय और तृतीय श्रेणीवालों

ठाकुर हुकुमसिंह से किसी राज्य विद्रोही कार्य करने के कारण स्थायी रूप से जब्त करने मे आया है।

गत शताब्दी के प्रारम्भ मे इस राज्य के प्रमुख जमींदार थे, महाजन के सरदार, चूरू तथा भद्र के ठाकुर गण, जिनमें महाजन के सरदार के पास की इस्टेट का काफी भाग राज्य में मिला दिया गया है, फिर भी इस इस्टेट के अधिकारी अब भी राज्य के मुख्य सरदार तथा नोबुल हैं। शेष का दो इस्टेटों के अधिकारी वानीरोत घराने के कुंठल तथा सैनदासोत घराने के वंशज हैं और जिनके पास में क्रमश ८० तथा १०० गाँव हैं। चूरू के वानीरोत गण सन १८१८ ई० में तथा भद्र के सैनदासोत गण का सन १८१६ ई० में महाराजा सूरत सिंह ने क्रमश: चूरू तथा भद्र से लम्बी लड़ाई-झगड़ों के बाद निकाल बाहर किए गए। दोनों घरानों के दुखिया सरदारों की परवरिश के लिये कुछ गाँव अवश्य मिले हुए हैं और अब भी उनकी काफी कद्र की जाती है।

तीसरी श्रेणी महाराजा गजसिंह के वंशजों की है जो राजवी कहे जाते हैं और इनके पास २२ गाँव हैं इनकी काफी संख्या है इनमें वर्तमान समय में महाराज लालसिंह का स्थान उल्लेख योग्य था आप कुछ समय तक हिज हाईनेस की कौंसिल के सदस्य भी रहे थे आप हिज लेट हाईनेस तथा इनके भाई वर्तमान हिज हाईनेस के पिता थे।

चौथी श्रेणीवालों के अधिकार में लगभग ३० गाँव हैं। ये लोग

है। इसके बदले में श्रीमान हिज हाईनेस की ओर से उनके यहाँ जब कभी विवाह या मृत्यु-संस्कार होता है, तब रीज-बक्षिश या राज बक्षिश मिलता है। अब तक न्योता तथा रीज-बक्षिश की रकम की तादाद में विभिन्नता थी। वह राजा की प्रसन्नता तथा ठाकुर की ताक़त पर निर्भर करती थी। किन्तु वर्तमान श्रीमान हिज हाईनेस के राज्यारोहण के समय में रीजेंसी कौंसिल ने इन दोनों के लिये राजा साहब की नाबालिगी के समय में एक मार्गदर्शक निश्चित नियम बना दिया था वही ढंग अब चालू है।

जैसा ऊपर बताया गया है कि पुगल, महाजन, चूरू और भद्र की इस्टेटों के साथ राज्य की ओर से काफी लड़ाई झगड़ा और उत्पात हुआ था और इन लगातार लड़ाई-झगड़े के कारण राज्य ने अपने मातहतवाले सुप्रसिद्ध ठाकुरों की आर्थिक स्थिति काफी खराब कर दी थी। यही नहीं, इस लड़ाई-झगड़ों का फल भी नरेशों के पक्ष में अच्छा हुआ था। उनकी जड़ मजबूत भी हो गई। इसके लिये कर्नल पालेट साहब ने अपने गज़ेटियर में अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है —

No State in Rajputana in which the old feudal tenure has so nearly passed away and the power of the Ruler is so absolute as in Bikaner

इसका यह नतीजा निकला कि आज के बीकानेर में किसी भी नोबुल या सरदार में राज्य के खिलाफ़ सामना खींचने की कुछ भी ताकत नहीं है। हाँ, सन १८८४ ई० में इन सरदारों के एक जत्थे ने

करते हैं। इस घराने के दो सदस्य महाराजा सूरतसिंह, महाराजा रतनसिंह, महाराजा सरदारसिंह तथा महाराजा डूंगरसिंह के दीवान भी रहे हैं।

वारसिंह वच्छावत के वंशजों ने उच्च पदों पर काफी उन्नति की थी। किन्तु सन् १६१३-३१ ई० के समय के राजा सूरसिंह ने एक लड़के को छोड़ इस घरानेवालों को सभा को बीकानेर से अलग करने की कृपा की थी। इस राज छोड़ने के हुक्म से इस घराने का वही एक लड़का अवश्य ही बचा रहा था, क्योंकि उस समय वह अपनी माँ के साथ ननिहाल में था।

सान्ताजी राठौ के वंशज इस समय भी राज्य के कुछ साधारण पदों पर वर्तमान हैं। पूर्व में इनमें-से एक राजा रायसिंह के समय में जागीर मंजूरी के मुंशी रहे थे। इन्हीं के पुत्र कल्याणदास राजा सूरसिंह के दीवान थे। इसी घराने के मेहता मोहनराय महाराजा अनूपसिंह के भी दीवान रहे थे।

नापा सखला के वंशज राजा सूरसिंह के समय तक बीकानेर के किलेदार के पद पर रहे थे। उनके बाद राजा सूरसिंह के अप्रसन्न हो जाने के कारण इस घरानेवालों को उस पद का परित्याग करना पड़ा था। उनमें के अधिकांश उसी समय वहीं मार भी डाले गए थे। शेष जो बच रहे थे, वे मारवाड़ को भाग गए थे।

वेला परिहार के कई घरानों के पूर्वज हैं उनमें के दो घरानेवाले बराबर ही किसी-न-किसी पद पर रहकर राज्य की सेवा करते ही जा रहे

जन्म सिद्ध अधिकारी गिना जाता है दूसरे को अपने पुस्तकालय की देख रेख का अधिकारी बनाया था। यह वही पुस्तकालय है, जिसकी गिनती बीकानेर की सुप्रसिद्ध वस्तुओं मे की जाती है। इनके वंशजों को राज्य मे कुछ गाँव की मजूरी भी प्राप्त है महाराजा सरदारसिंह ने इनको कविराज की उपाधि भी प्रदान की थी यही नहीं, उन सबको उन्होंने ताज़ीम का भी अधिकार प्रदान किया था। इस घराने के राज्य मे आकर बसने पर इनके अधिकार मे बीकानेर के इतिहास-संग्रह का काम सुपुर्द करने मे आया है बीकानेर राज्य के इतिहास की पूरी सामग्री दयालदास की लिखी हुई ख्यात नामक पुस्तक से प्राप्त होती है जो इसी सुप्रसिद्ध घराने मे पैदा हुए थे और जिनका स्वर्गवास काफी बुढाई मे हुआ था।

राजा करणसिंह का विवाह रामपुर की कन्या के साथ हुआ था। आप अपने साथ वहीं से खींयाँजी नामक एक व्यक्ति को साथ लाए थे, जिनको आपने सभी प्रकार की मजूरियों की नकलबही (रजिस्टर) रखने का अधिकारी बनाया था। अब तक इसी घराने के वंशजों के पास मे यह अधिकार बराबर चला जा रहा है।

महाराजा अनूपसिंहजी के साथ वर्तमान खानदारी खरीता नवीस तथा राज-खजाची के पूर्वज आए थे।

महाराजा गजसिंह तथा महाराजा सूरतसिंह के साथ आने वाले लोगों के वंशजों के पास मे भी बहुत से राज्य के साधारण पद अब भी हैं।

जन्म सिद्ध अधिकारी गिना जाता है दूसरे को आपने पुस्तकालय की देख रेख का अधिकारी बनाया था। यह बड़ा पुस्तकालय है जिसकी गिनती बीकानेर की सुप्रसिद्ध वस्तुओं मे की जाती है। इनके वंशजों को राज्य से कुछ गाँव की मजूरी भी प्राप्त है महाराजा सरदारसिंह ने इनको कविराज की उपाधि भी प्रदान की थी यही नहीं, उन सबको उन्होंने ताज़ीम का भी अधिकार प्रदान किया था। इस घराने के राज्य मे आकर बसने पर इनके अधिकार मे बीकानेर के इतिहास-संग्रह का काम सुपुर्द करने मे आया है बीकानेर राज्य के इतिहास की पूरी सामग्री दयालदास की लिखी हुई ख्यांत नामक पुस्तक से प्राप्त होती है जो इसी सुप्रसिद्ध घराने मे पैदा हुए थे और जिनका स्वर्गवास काफी बुढ़ाई मे हुआ था।

राजा करणसिंह का विवाह रामपुर की कन्या के साथ हुआ था। आप अपने साथ वहीं व खींयाँजी नामक एक व्यक्ति को साथ लाए थे, जिनको आपने सभी प्रकार की मजूरियों की नकलबही (रजिस्टर) रखने का अधिकारी बनाया था। अब तक इसी घराने के वंशजों के पास मे यह अधिकार बराबर चला जा रहा है।

महाराजा अनूपसिंहजी के साथ वर्तमान खानदारी खरीता नवीस तथा राज-खजाची के पूर्वज आए थे।

महाराजा गजसिंह तथा महाराजा सूरतसिंह के साथ आने वाले लोगों के वंशजों के पास मे भी बहुत से राज्य के साधारण पद अब भी हैं।

शाखा की सारंगोत उपशाखा के हैं। इसमे १३ गांव है, जो नोहर तहसील के उत्तर मे स्थित हैं। इनकी वार्षिक आय २५ हजार रुपयों की है, जिसमे से ८ हजार ७ सौ ६५ रुपए सालाना इनका मालगुजारी के राज्य को अदा करने पड़ते है। वर्तमान पट्टेदार साहब को श्रीमान राव कानसिंह ने दत्तक लिया था श्रीमान स्व० राव कानसिंह । सन १९०८ ई० को स्वर्गवासी हो जाने पर आप इसके उत्तराधिकारी हुए हैं। आप राज्य के मुख्य ४ ठरायतों मे से एक है और राज्य के मुख्य नाजुल भी हैं। राज्य की ओर से आपको राव की उपाधि भी प्राप्त है। प्रारम्भ में यह ठिकाना राजा रायसिंह ने श्री सारंग को प्रदान किया था, जो इस घराने के पूर्वज हैं यह ठिकाना आपके उस प्रतिभापूर्ण कार्य के लिये प्रदान करने में आया था, जो आपने अकबर की अध्यक्षता में श्रीमान राजा रायसिंह के साथ काश्मीर के युद्ध के अवसर पर उसको विजय कराने में किया था। इसके बाद सन १७३४ ई० में ठाकुर कुशलसिंह ने भी महाराजा ज़ोरावरसिंह की इसी प्रकार की सहायता की थी। जब तत्कालीन जोधपुर नरेश ने श्रीमान पर हमला किया था, तब आपने उस समय तीरबाजी से उनकी रक्षा करते हुए जोधपुर नरेश को पीछे हटा दिया था। वर्तमान ठिकानेदार साहब ने हमारी इस भारत के देशी नरेश नामक ग्रंथावली के प्रकाशन मे भी काफी दिलचस्पी प्रकट की है।

पुगल

राव श्री देवीसिंहजी-आप पुगलिया शाखा के भाटी राजपूत

थी। श्रीमानजी ठाकुर मोतीसिंह साहब के स्वर्गवासी हो जाने पर सन १९२३ ई० में अपने ठिकाने के उत्तराधिकारी हुए है। आपने सादुल लाइट इन्फेंटरी के सहकारी कमांडेंट, गंगारिसाला के सहकारी कमांडेंट तथा कमांडेंट और बीकानेर राज्य के रिक्रूटिंग आफ़िसर पदों पर सैनिक कार्य भी किया है। इन पदों के अतिरिक्त मास्टर आफ़ सेरीमनीज़ तथा मिनिस्टर-इन-चार्ज फाईनेन्स रिलीफ़ आपरेशन्स नामक राज्य के महत्वपूर्ण पदों पर भी कार्य किया है। इस समय भी आप इक्ज़ेक्यूटिव काउंसिल के एक सदस्य हैं। आप श्रीमान हिज़ हाईनेस महाराजा बहादुर के ए० डी० सी० भी हैं। आप २८ वीं जुलाई सन १९१७ ई० को सरदार बहादुर की उपाधि के साथ आर्डर आफ दी बृटिश एम्पायर फर्स्ट क्लास भी प्रदान किए गए हैं। १ ली जनवरी सन १९२० ई० को कमांडर आफ दी बृटिश एम्पायर भी बनाए गए हैं। आपने सन १९३९-४० ई० के फेमिन रिलीफ़ आपरेशन में जो प्रतिपादण कार्य किया था उस के उपलक्ष में १ ली जनवरी सन १९४१ ई० को आपको कैसरेहिन्द नामक गोल्ड मेडल भी प्रदान करने में आया है।

बारी

श्रीमान ठाकुर अमरसिंह बीकावत शाखान्तर्गत नारणोत उपशाखा के आप राठौरवंशी राजपूत हैं। आपके ठिकाने के अन्तर्गत कुल १५ गाँव हैं, जिनकी वार्षिक आय २५ हजार रुपयों की है। राज्य को इन्हें

हैं। आप भाटीवंशी राजपूत हैं। आप पुगल के राव के पास के घनिष्ट सम्बन्धी भी हैं। यह वही घराना है जिसमें बार बार बीकानेर के नरेशों का विवाह होता जा रहा है।

हाड़ासर

लेफ्टीनेंट कर्नल रावबहादुर ठाकुर जीवराजसिंह—आप ताज़ीमी पट्टेदार हैं। आप सेना तथा गृह-मंत्री हैं और साथ ही आप मास्टर आफ़ सेरीमनीज़ भी हैं। आप श्रीमान हिज़ हाईनेस के एफ० ए० डी० सी० भी हैं। आपको २१ वीं जून सन १९२६ ई० को बृटिश सरकार से रावबहादुर की उपाधि भी प्राप्त हुई है।

रामपुरा

लेफ्टीनेंट कर्नल ठाकुर आशुसिंहजी साहब—आप ताज़ीमी सरदार हैं। आप श्रीमान हिज़ हाईनेस महाराजा बहादुर के मिलीटरी सेक्रेटरी तथा ए० डी० सी० हैं।

सुरनाना

रावबहादुर ठाकुर भोरसिंहजी साहब—सुरनाना के आप ताज़ीमी सरदार हैं आपने वाल्टेर नोबुल्स स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है। बीका घराने की करमसोत उपशाखा के आप राठौर-वंशी राजपूत हैं सूरतगढ़ के तहसीलदार तथा नाजिम, असिस्टेंट रेवेन्यू कमिश्नर और रेवेन्यू कमिश्नर, इन्स्पेक्टर जनरल आफ़ पुलिस तथा रेवेन्यू कमिश्नर तथा कन्ट्रोलर

अटेंडेंस हैं बृटिश सरकार ने आपको १ ली जनवरी सन १९२१ ई० को रावबहादुर की उपाधि भी प्रदान करने की कृपा है।

शंखू

ठाकुर हीरसिंहजी साहब-आप शंखू के ताज़ीमी पट्टेदार हैं। बीकावत शाखा के किशनसिंहोत घराने के आप राठौरवंशी राजपूत हैं। बीकानेर के छठे नरेश रायसिंह के आप वंशजों में हैं। आपने वालटेर नोबुल स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है।

राजपुरा

ठाकुर कुशलसिंह-आप राठौरवंशी राजपूत तथा राज्य के ताज़ीमी पट्टेदार हैं। बीका शाखा के भीमराजोत घराने में आप पैदा हुए हैं।

कनवारी

ठाकुर चन्दरसिंह-आप राठौरवंशी राजपूत तथा राज्य के ताज़ीमी पट्टेदार हैं। आप बीकावत शाखा के रूंगरोत घराने में पैदा हुए हैं आपने बीकानेर के वालटेर नोबुल स्कूल तथा बाद को अजमेर के मेयोकालेज में शिक्षा प्राप्त है मेयो कालेज की तो आपने डायर डप्लोमा परीक्षा भी उत्तीर्ण की है। हुप सेक्रेटरी तथा असिस्टेंट कंट्रोलर आफ हाउसहोल्ड के पदों पर रहकर आपने राज्य की सेवा भी की है।

राजासर

लेफ्टीनेंट कर्नल रावबहादुर राजवी गुलाबसिंह-आप राजासर के ताजीमी राजवी हैं। आफिसर कमांडिंग, बॉडी गार्ड, ए० डी० सी० टू हिज़ हाईनेस तथा इन्स्पेक्टर जनरल आफ़ पुलीस के पदों पर रहकर आपने राज्य की सेवाएं की हैं। इस समय भी आप कन्ट्रोलर आफ़ दी हाऊसहोल्ड के पद पर विद्यमान हैं।

[ग] सेठ-साहूकार

बीकानेर राज्य में ठिकानेदारों के अतिरिक्त एक श्रेणी सेठ-साहूकारों की भी है धनी होने के कारण इनका सम्मान सबसे अधिक है इनका व्यापार सारे भारत में भी होता है।

(१) राय बहादुर राजा सर विश्वेश्वरदास डागा Kt K. C. I. E.—आप जाति के माहेश्वरी हैं। आप बीकानेर के खास बड़े बैंकरों में हैं। इसके अतिरिक्त कलकत्ता, बम्बई, नागपुर, कामठा, रायपुर, डूंगरगढ़, नांदगांव, हैदराबाद (दक्षिण) मदरास, बङ्गलोर, सियालमार तथा जबलपुर, आदि स्थानों पर आपकी कोठियां हैं, जहाँ से बैंकिंग आदि सभी प्रकार का लेन-देन का कारोबार होता है नागपुर तथा बेतूल आदि नगरों में आपकी जमीं-दारी भी है। बृटिश सरकार के कुछ जिलों तथा कुछ रियासतों के वो ट्रेज़रर भी हैं। बृटिश सरकार ने आपको रायबहादुर

आलीशान बिल्डिंग भी है। आपका कारोबार मोहता ब्रदर्स नामक फर्म से होता है आप अध्यात्म विषय पर कई सुन्दर ग्रन्थ लिखे हैं इलाहाबाद से प्रकाशित चाँद नामक मासिक पत्रिका को आपने काफी सहायता भी दी है। इस समय चाँद प्रेस तथा चाँद मासिक पत्रिका के आप स्वामी हैं। आपके भ्राता रायबहादुर सेठ शिवरतनजी मोहता एक कुशल तथा पटु व्यापारी हैं श्रीभागीरथ मोहता इस समय कलकत्ते की दूकान की देख-रेख करते हैं आप सभी हिन्दी-साहित्य सेवी हैं।

(६) सेठ रामरतनदास बागड़ी—जाति से आप माहेश्वरी हैं। बीकानेर के अच्छे बैंकरों में आपकी गिनती है। कलकत्ता, कोटा तथा इन्दौर में आपका अच्छा कारोबार भी चल रहा है।

(७) राय बहादुर सेठ हजारीमल तथा

(८) राय बहादुर सेठ रामेश्वरदास अगरवाला—चूरू तहसील अन्तर्गत दुधुआखारा नामक गाँव के आप निवासी हैं। बीकानेर के बैंकरों में आप दोनों का अच्छा स्थान भी है। आप लोगों का कलकत्ता में अच्छा कारोबार चल रहा है।

(९) सेठ शुभकरण सुराना—आप जाति के ओसवाल हैं। आप चूरू निवासी हैं आप कलकत्ते के खास बैंकर हैं।

(१०) सेठ सुमेरमल तथा

(११) सेठ बुधमल सरदार शहर के सेठ संपतराम के आप पुत्र हैं जाति के आप ओसवाल हैं। बीकानेर के खास महाजनों में आपकी गणना है आप कलकत्ता में अपना कारोबार चला रहे हैं।

५–सेठ पानेचन्द सिंघी, सुजानगढ़ ।

६–सेठ रामनारायन टिकमानी, रायगढ़ ।

७–सेठ कालूराम मन्त्री, रेनी ।

८–सेठ मानिकचन्द नेवार, नाहर ।

९–सेठ हरखचन्द भदानी, डूँगरगढ़ ।

१०–सेठ आईदान हिस्सारिया, सूरतगढ़ ।

११–सेठ मोहनलाल, गगानगर ।

१२–सेठ पूनमचन्द कोठारी, आनरेरी मैजिस्ट्रेट व मुखिया ।

१३–सेठ प्रतापचन्द बाँठिया " "

१४–सेठ लूणकरण दफ्तानी " "

१५–सेठ भैरोदान सेठी ।

१६–सेठ कुं० गिरधरलाल मोहता, मेसर्स मोतीलाल सदासुख के मालिक हैं ।

१७–सेठ पूनमचन्द नाहटा, भद्र ।

[घ] खानदानी पदाधिकारी गण

वैद घरानेवाले

१—महाराव खुमाणसिंह मेहता ।

२—राव गोपालसिंह मेहता ।

३—मेहता बुधसिंह वैद—आप आफिसर-देवस्थान के पद पर हैं ।

४—डिपटी कंट्रोलर आफ हाऊसहोल्ड (बी० ब्रांच)—
ठाकुर किशनसिंह बी० ए०

५—डिपुटी कंट्रोलर आफ हाऊसहोल्ड (ए ब्रांच)—कुंभर
नारायणसिंह ।

६—असिस्टेंट कंट्रोलर आफ हाऊसहोल्ड—कुंभर आनन्द
सिंह बी० ए० (एल् एल० बी०)

७—शिकार आफ़िसर—ठाकुर जोरावरसिंह

८—परसनल असिस्टेंट—व्यास गम्भीरचन्द

९—एकाउंट-आफ़िसर बाबू जुगलबिहारीलाल ।

[२] राज्य भवन ।

१—स्थानापन्न प्रधान तथा अर्थ-मन्त्री—मेजर महाराज
श्री मान्धातासिंह बहादुर ।

२—स्टेट एक्जक्यूटिव कौंसिल के उपाध्यक्ष, विदेश,
राजनीति, स्वास्थ्य तथा शिक्षा मंत्री—मेजर के०
एम्० पानिकर बी० ए० [आक्सन] बार एट लॉ ।

३—सेना तथा गृह मन्त्री—लेफ्टिनेंट कर्नल रावबहादुर
ठाकुर जीवराजसिंहजी आफ़ हाड़ासर ।

४—पब्लिक वर्क्स तथा जनरल मिनिस्टर—कुंअर जसवंत
सिंह बी० ए० आफ दाऊदसर ।

५—माल-मंत्री—कुंअर श्री प्रेमसिंहजी बी० ए० ।

संक्षिप्त इतिहास

इस राज्य के अधिकारी देवरा राजपूत हैं। यह चौहानवंश की एक शाखा है, जो दिल्ली के चौहानवंशी महाराजा पृथ्वीराज के वंश बतलाए जाते हैं। सिरोही के राज्य की नींव डालनेवाले कोई एक देवराज नामक नरेश थे। ये ही देवरा राजपूत के सर्वप्रथम राजा हुए हैं। इनका समय तेरहवीं शताब्दी बतलाया जाता है। किन्तु चौहान लोग देश के इस भाग में अर्थात् मारवाड़ के जयलोर में सन ११५२ ई० के लगभग दिखाई दिए थे—ऐसा कहा जाता है वर्तमान राजधानी सिरोही सन १४२५ ई० में बनाई गयी है। इसी समय के लगभग चितौड़ के राणा ने गुजरात के कुतुबुद्दीन की सेना की डर के कारण आबू की पर्वतमालाओं में शरण ली थी और जब वहाँ से वह फौज हट गई तब यह अनुभव कर कि यह स्थान बहुत ही मजबूत है, अतः उन्होंने उसको छोड़ने से इन्कार कर दिया था। सिरोही राज्य के तत्कालीन नरेश के एक राजकुमार ने काफी परिश्रम कर तथा अपनी सेना की अटूट सहायता से बड़ी कठिनाई के साथ उन्हें वहाँ से हटाकर दूर किया था। तबसे सन १८३६ तक किसी भी राजा को वहाँ पर टिकने का अधिकार न मिला था, जो रोक सन १८३६ ई० में जाकर ही हटाई गई है।

यहाँ यह बात भी खास ध्यान देने की है कि देवराज के उत्तराधिकारियों को परमार या पवाँरों के साथ लगातार युद्ध भी करना पड़ा था। इसका मुख्य कारण यह था कि इधर उन्हीं लोगों का अधिकार था। सन १२०३ ई० के लगभग इन लोगों ने सर्वप्रथम चन्द्रवती

बीच में एक संधि पत्र लिखा गया, जिसमें राव शिवसिंह ने बृटिश सरकार की मातहती स्वीकार की और बृटिश-सरकार की ओर से उनके संरक्षण का भार स्वीकार करने में आया। साथ ही राव शिवसिंह ने बृटिश एजेंट की इच्छानुसार राज्य-प्रबन्ध चलाने को भी स्वीकार किया था। साथ ही राज्य की मालगुजारी का ३ अष्टमांश बृटिश सरकार को अदा करना भी उन्होंने मंजूर किया था।

सन १८४५ ई० में एक सैनोटोरियम बनवाने के लिये सिरोही के राव साहब ने कुछ जमीन बृटिश-सरकार को आबू में प्रदान की थी। सन १८५७ ई० के सिपाही-विद्रोह के समय में राव शिवसिंह ने बृटिश सरकार की काफी सहायता की थी। उसका विचार कर खिराज की रकम, जो यहाँ के सिक्कों में १५ हजार रुपए प्रतिवर्ष अदा की जाती थी, घटाकर आधी कर दी गई। राव शिवसिंह सन १८६२ ई० में स्वर्गवासी हुए।

आपके बाद आपके पुत्र राव उम्मेदसिंह राज्य के उत्तराधिकारी हुए। आपके जमाने में सिरोही में एक भारी अकाल भी पड़ा था, जिससे यह राज्य काफी बर्बाद भी हो गया था। आपके समय में भटाना के नामी ठाकुर नाथूसिंह से लड़ाई झगड़ा भी हुआ था मारवाड़ के भीलों ने भी जब कभी लूट पाट भी मचा दी थी, निदान सन १८७५ ई० में राव उम्मेदसिंह स्वर्गवासी हो गए। आपके बाद आपके एक मात्र पुत्र केसरीसिंह राजगद्दी के उत्तराधिकारी हुए।

हिज़ हाईनस महाराजाधिराज महाराव सर केसरी .

और १ ली जनवरी सन १९३२ ई० को जी० सी० आई० ई० भी घोषित किए गए हैं।

श्रीमान ने निम्नलिखित महारानियों के साथ विवाह किया है —

[१] कच्छ-भुज के वर्तमान हिज हाईनेस की सबसे छोटी राजकुमारी के साथ। इनसे आपको तीन राजकुमारियां पैदा हुई हैं, जिनमें से एक का स्वर्गवास हो गया है।

[२] रतलाम के महाराजा बहादुर की भगिनी राजकुमारी के साथ। इन महारानी साहिबा का स्वर्गवास हो गया है।

[३] कुवार (गुज़रात) के ठाकुर की कन्या के साथ।

[४] जूनिया-अजमेर के ठाकुर की कन्या के साथ।

श्रीमान एच० एच० महाराव बहादुर के सबसे नजदीकी सम्बन्धी निम्नलिखित आपके चचेरे भाई है।

[१] नदिया के जेतसिंह के पुत्र महाराज शंभूसिंह।

[२] अजारी के ज़ोरावरसिंह के पुत्र महाराज अमरसिंह।

[उपरोक्त दोनों ही स्वर्गवासी हो गए हैं]

[३] मनादर के महाराज मानसिंह।

राजघरानों में बूंदी तथा कोटा के राजघराने इस राजघराने से सम्बन्ध रखनेवालों में ख़ास है। पूर्व में जयपुर के कछवाहा घराने के साथ, जोधपुर तथा किशनगढ़ के राठौर घरानों के

अगस्त सन १९२० ई० को स्वर्गवास हो गया है (३) मनादर के महाराज मानसिंह हैं। उपरोक्त प्रथम दो के स्वर्गवासी हो जाने के कारण तथा उनको कोई भी सन्तान न रहने के कारण आपका घराना यहीं पर समाप्त हो जाता है। ये सभी श्रीमान हिज हाईनेस महाराव साहब के चचेरे भाई होते हैं। दरबार में श्रीमान के ये सामनेवाले स्थान पर बैठते थे और दोहरी ताजीम भी प्राप्त करते थे। अब केवल इसके अधिकारी मनादर के महाराज मानसिंह हैं। इन्हीं के बराबर के सम्मान के मन्दार के राज साहिबान सूरजनसिंह तथा मुहब्बतसिंह भी अधिकारी हैं।

चार सरायतों में पाडिव, जावाल, कलंदरी तथा पोसालिया के ठाकुर श्रीमान हिज़ हाईनेस की दाहिनी तथा बाईं बाजू में बैठते हैं। पाडिव के ठाकुर की गैरहाजिरी में दरबार में उनका स्थान नीवाज के ठाकुर को प्राप्त होता है। ये दोनों ठाकुर एक साथ ही दरबार में कभी उपस्थित नहीं हुआ करते। इनके बाद रोहुआ तथा भटाना के ठाकुरों की बारी आती है, इनको भी दोहरी ताज़ीम प्राप्त होती है। मंदवाड़ा तथा दवाणी के ठाकुरों को इकहरी ताजीम प्राप्त होती है। सभी सरदारों के यहाँ छोटी सन्तानों के परवरिश का प्रबन्ध करना आवश्यक होता है और उत्तराधिकार बड़ी सन्तान को दिया जाता है। दरबार को मालगुजारी में से खास खास के लिये उनकी इस्टेट की पूरी निकासी में से रुपए में चार आने से लेकर साधारण श्रेणी के लिये रुपए में बारह आना तक सदा देना पड़ता है इन

जन्म सन १८८४ ई० में हुआ था। आप श्रीमान हिज़ हाईनेस के चचेरे भाई थे। ६ ठी जनवरी सन १८९५ ई० को अपने पिता के स्वर्गवासी हो जाने पर अपनी इस इस्टेट के आप उत्तराधिकारी हुए थे। आपकी इस इस्टेट का वार्षिक आय ५०००) की है। आपको सन १९२, ई० में महाराज की उपाधि प्राप्त हुई थी। १० वीं अगस्त १९४० ई० को उत्तराधिकार के लिये किसी पुत्र को बिना छोड़े ही आप स्वर्गवासी हो गए। इस प्रकार इस घराने का आगे का उत्तराधिकार रुक गया है।

मनादर

महाराज मानसिंह—आप स्वर्गीय राज साहिबान तेजसिंह के पुत्र तथा वर्तमान श्रीमान हिज़ हाईनेस महाराव साहब के चचेरे भाई हैं आप सन १८८७ ई० में पैदा हुए हैं आपने अजमेर के मेयोकालेज में शिक्षा प्राप्त की है। अपने बड़े भाई राज साहिबान दलपतसिंह के उत्तराधिकार के लिये बिना किसी पुत्र के छोड़े ही स्वर्गवासी हो जाने पर, आपको अलग से मिली रहने पर भी, मनादर की जागीर के उत्तराधिकारी होने के लिये आपने एक दर्खास्त दी थी किन्तु राजवी लोगों के लिये दत्तक लेने की पुरानी प्रथा न होने के कारण उनकी यह दर्खास्त खारिज कर दी गई। किन्तु आगे जाकर मनादर की जागीर उन्हीं को प्रदान भी कर दी गई। आपको अभयसिंह, रामसिंह तथा ईश्वरसिंह नामक तीन पुत्र हैं। सन १९२५ ई० में आपको महाराज की उपाधि भी प्रदान की गई है।

पादिव

ठकुरान राजश्री बलवन्तसिंह—आप स्व० सभाभूषण ठकुरान राजश्री अभयसिंह के पुत्र हैं। आपका जन्म १४ वीं मई सन १९०२ ई० को हुआ है। आपने सिरोही के कालविन हाई स्कूल से हाई स्कूल की परीक्षा पास की है। आपको इस्टेट की वार्षिक आय १० हजार रुपयों की है। आपको अपनी आमदनी में-से रुपए में छ आना दरबार को अदा करना पड़ता है।

कलन्द्री

ठकुरान राजश्री चिम्मनसिंह— आप डूंगरावत घराने के हैं। १२ वीं मार्च सन १९१९ ई० को बिना पुत्र सन्तान छोड़े ही ठकुरान राजश्री कानसिंह के स्वर्गवास हो जाने पर दत्तक के जरिए आप इस इस्टेट के उत्तराधिकारी हुए हैं। आप जाकेड़ा घराने से आए हैं। आपको दत्तक लिये जाने को दरबार ने भी कुछ शर्तों पर स्वीकार कर लिया है। इस इस्टेट की वार्षिक आय २ हजार रुपयों की है जिसमें से रुपए में छ आना दरबार को इन्हें अदा करना पड़ता है।

जावाल

ठकुरान राजश्री मेघसिंह आप डूंगरावत घराने के हैं। आप सन १८९५ ई० में पैदा हुए हैं। आपको नून घराने से दत्तक लिया गया है। इनकी वार्षिक आय ५ हजार रुपयों की है, जिसमें से रुपए पीछे छ आना दरबार को इन्हें अदा करना पड़ता है।

जोधपुर स्टेट के नरेश

१ राव हीरामलजी		१४७५
२ राव जोधाजी		१४५३
३ राव सुजाजी		१४९१
४ राव उदयसिंहजी	राज्य नहीं किया	
५ राव गङ्गासिंहजी		१५१६
६ राव मालदेवजी		१५३२
७ चन्द्रसेनजी		१५६२
८ राव उदयसिंहजी	(मोटा राजा)	१५८१
९ राजा शूरसिंह		१५९५
१० राजा गजसिंहजी		१६२०
११ महाराजा यशवन्तसिंह	(प्रथम)	१६३८
१२ महाराजा अजीतसिंह		१७०७
१३ महाराजा अभयसिंह		१७२४

परिशिष्ट

जोधपुर स्टेट के नरेश

क्रम	नाम		वर्ष
१	राव रिणमलजी		१४२८
२	राव जोधाजी		१४५३
३	राव सुजाजी		१४९१
४	राव उदयसिंहजी	राज्य नहीं किया	
५	राव गङ्गासिंहजी		१५१६
६	राव मालदेवजी		१५३२
७	चन्द्रसेनजी		१५६२
८	राव उदयसिंहजी	(मोटा राजा)	१५८१
९	राजा शूरसिंह		१५९५
१०	राजा गजसिंहजी		१६२०
११	महाराजा यशवन्तसिंह	(प्रथम)	१६३८
१२	महाराजा अजीतसिंह		१७०७
१३	महाराजा अभयसिंह		१७२४

१५ दीवान मुजाहिदखाँ (द्वितीय)

१६ दीवान कमालखाँ उर्फ
बरन कमाल

१७ दीवान फतेहखाँ (प्रथम)

१८ फीरोजखाँ (द्वितीय)

१९ दीवान करीमदादखाँ

२० दीवान पहाड़खाँ (द्वितीय)

२१ दीवान बहादुरखाँ

२१ दीवान सलीमखाँ

२१ दीवान शेरखाँ

२४ दीवान शमशेरखाँ

२५ दीवान फीरोजखाँ तृतीय)

२६ दीवान फतेहखाँ (द्वितीय)

२७ दीवान जोरावरखाँ बहादुर

२८ दीवान नवाब शेरमुहम्मदखाँ

२९ के० ह० हि० ह० दीवान
नवाब श्री ताले मुहम्मदखाँ
बहादुर ।

जैसलमेर स्टेट के नरेश

१ महारावल सबलसिंह

२ महारावल अमरसिंह

३ महारावल जसवन्तसिंह

४ महारावल बुधसिंह

५ महारावल अक्षयसिंह

६ महारावल मूलराज

७ महारावल गजसिंह

८ महारावल रणजीतसिंह

९ महारावल बेरीसाल

१० महारावल शालिवाहन
(श्यामसिंह)

११ महारावल जवाहरसिंहजी के० सी० एस० आई० (वर्तमान

१५ दीवान मुजाहिदखाँ (द्वितीय)
१६ दीवान कमालखाँ उर्फ करन कमाल
१७ दीवान फतेहखाँ (प्रथम)
१८ फीरोजखाँ (द्वितीय)
१९ दीवान करीमदादखाँ
२० दीवान पहाड़खाँ (द्वितीय)
२१ दीवान बहादुरखाँ
२२ दीवान सलीमखाँ
२३ दीवान शेरखाँ
२४ दीवान समशेरखाँ
२५ दीवान फीरोजखाँ (तृतीय)
२६ दीवान फतेहखाँ (द्वितीय)
२७ दीवान जोरावरखाँ बहादुर
२८ दीवान नवाब शेरमुहम्मदखाँ
२९ हि० ह० हि० ह० दीवान नवाब श्री ताले मुहम्मदखाँ बहादुर।

जैसलमेर स्टेट के नरेश

१ महारावल सबलसिंह
२ महारावल अमरसिंह
३ महारावल जसवन्तसिंह
४ महारावल बुधसिंह
५ महारावल अखैसिंह
६ महारावल मूलराज
७ महारावल गजसिंह
८ महारावल रणजीतसिंह
९ महारावल बैरीसाल
१० महारावल शालिवाहन (श्यामसिंह)
११ महारावल जवाहरसिंहजी के० सी० एस० आई० वर्तमान

बीकानेर स्टेट के नरेश

१ राव बीका
२ राव नारा
३ राव लूनकरन
४ राव जैतसी
५ राव कल्याणसिंह
६ राजा रायसिंह
७ राजा दलपतसिंह
८ राजा सूरसिंह
९ राजा करणसिंह
१० महाराजा अनूपसिंह
११ महाराजा सरूपसिंह
१२ महाराजा सुजानसिंह
१३ महाराजा जोरावरसिंह
१४ महाराजा गजसिंह
१५ महाराजा राजसिंह
१६ महाराजा प्रतापसिंह
१७ महाराजा सूरतसिंह
१८ महाराजा रतनसिंह
१९ महाराजा सरदारसिंह
२० महाराजा डूंगरसिंह
२१ महाराजा सर गंगासिंहजी (वर्तमान)

सिरोही स्टेट के नरेश

१ शोभाजी (सिरोहीनगर बसाया)
२ सैंसमल (नवीन सिरोहीनगर ,,)
३ लाखाजी
४ जगमल
५ दूदा या अखैराज (प्रथम)
६ राय सिंह
७ उदयसिंह
८ दूदा
९ मानसिंह
१० सुरतान सिंह ५१ वर्षों में ५२ लड़ाइयां लड़ीं)